भजन-संग्रह दूसरा भाग

संग्रहकर्ता—

श्रीवियोगी हरिजी

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीहरिः

वक्तव्य

भजन-संग्रहके इस दूसरे भागको हमने दो विभागोंमें विभक्त कर दिया है । पहले विभागमें व्रजके महात्माओंकी बानियाँ और दूसरेमें आत्मानुभवी प्रेमी सन्तोंके अनुभवके रंगमें रँगे कुछ शब्द संगृहीत किये गये हैं ।

पहले विभागमें श्रीकृष्ण-प्रेमार्णवमें निमग्न महापुरुषोंके रसभरे भजन हैं । महात्मा सूरदासजीके पद पहले भागमें आ चुके हैं, क्योंकि तुलसी और कबीरसे हम उन्हें पृथक् नहीं कर सके । इस निकुञ्जमें अष्टछापके अन्य अनन्य भक्तों तथा हित-हरिवंश, स्वामी हरिदास, गदाधर भट्ट, हरिराम व्यास आदि व्रज-रस-मधुकरोंकी सुललित गुञ्जार हम सुनते हैं । इन सब महात्माओंने नन्दनन्दन कृष्णचन्द्रकी मधुर लीलाओंका प्रत्यक्ष अनुभव किया था, इसमें सन्देह नहीं । अपने अनुभवोंको इन्होंने अनुपम पदोंसे अंकित किया है । पद और सुनकर हमारा मलिन हृदय कृष्ण-रसमें उन्मत्त होकर मयूरवत् नृत्य करने लगता है । व्रज-बानीमें

वह सामर्थ्य है कि स्वयं व्रजराजकुमारको हमारे हृदय-आँगनमें मानो किलक-किलककर बालकेलि कराने लगती है। तब फिर किस अभागेका मन मचलकर व्रजमण्डलके इन भक्त महात्माओंके पदोंकी ओर आकर्षित न होगा ?

दूसरे विभागमें नानक, दादूदयाल, रैदास, मलूकदास आदि सन्तोंके पदोंका संक्षिप्त संग्रह है। सन्तशिरोमणि कबीर पहले भागमें आ चुके हैं। सूर और तुलसीका संग हम उन्हें कैसे छुड़ाते ! वास्तवमें ये शब्द सद्गुरुके प्रेम-बाण हैं। इनसे जो घायल हुआ, वह कृतकृत्य हो गया। वैराग्य और अनुरागकी झाँकी जैसी इन सन्त-बानियोंमें मिलती है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।

क्या कभी ऐसा दिन आयगा, जब हम सब इन पुनीत पदोंके प्रेम-रसमें डूब जायँगे, लगनके इन शब्द-बाणोंसे घायल हो जायँगे ? भगवान् शीघ्र वह दिन लावें, यही हमारी कामना है।

मोहन-निवास, पन्ना } वियोगी हरि

श्रीहरिः

अकारादि-क्रमसे विषय-सूची

[पहला खण्ड]

हितहरिवंश

स्वामी हरिदास

श्रीभट्ट

[दूसरा खण्ड]

दादूदयाल

रैदास

भजन पृष्ठ

मलूकदास

चरनदास

भगवान् और उनकी ह्लादिनी शक्ति श्रीराधाजी

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

भजन-संग्रह

दूसरा भाग (पहला खण्ड)

हितहरिवंश

(१) गौरी

यह जु एक मन बहुत ठौर करि
कहि कौने सचु पायो ।
जहँ तहँ बिपति जारि जुवती ज्यों
प्रगट पिंगला गायो ॥
द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठि
परत कौन पै धायो ।
कहि धौं कौन अंक पर राखै
ज्यों गनिका सुत जायो ॥
हितहरिबंस प्रपंच बंच सब
काल ब्यालको खायो ।

यह जिय जानि स्याम-स्यामा पद-
कमल संगि सिर नायो ॥

(२) पद

तातें भैया, मेरी सौं, कृष्ण-गुन संचु ।
कुत्सित बाद त्रिकारहिं परधन
सुनु सिख परतिय बंचु ।
मनि गुन पुंज जु ब्रजपति छाँड़त
हितहरिवंस सुकर गहि कंचु ॥१॥
पायो जानि जगतमें सब जन
कपटी कुटिल कलिजुगी टंचु ।
इहि परलोक सकल सुख पावत,
मेरी सौं, कृष्ण-गुन संचु ॥२॥

(३) बिलावल

मोहन लालके रँग राची ।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ,
बात दसोदिसि माची ॥

कंत अनंत करौ किनि कोऊ,
नाहिं धारना साँची।
यह जिय जाहु भले सिर ऊपर,
हौं तु प्रगट ह्वै नाची॥
जाग्रत सयन रहत ऊपर मनि,
ज्यों कंचन सँग पाँची।
हितहरिबंस डरौ काके डर,
हौं नाहिन मति काँची॥

(४) भैरवी

रहौ कोउ काहू मनहि दियें।
मेरे प्राननाथ श्रीस्यामा,
सपथ करों तिन छियें॥
जे अवतार कदंब भजत हैं,
धरि दृढ़ ब्रत जु हियें।
तेऊ उमगि तजत मरजादा,
बन बिहार रस पियें॥

खोये रतन फिरत जे घर घर,
कौन काज इमि जियें।
हितहरिबंस अनतु सचु नाहीं,
बिन या रसहिं लियें॥

(५) बिहाग

प्रीति न काहु कि कानि बिचारै।
मारग अपमारग विथकित मन,
को अनुसरत निवारै॥
ज्यों पावस सरिता जल उमगत,
सनमुख सिंधु सिधारै।
ज्यों नादहिं मन दिये कुरंगनि,
प्रगट पारधी मारै॥
हितहरिबंसहि लग सारँग ज्यों
सलभ सरीरहिं जारै।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु
कौन अपनपौ हारै॥

स्वामी हरिदास

(६) विभास

ज्योंहीं ज्योंहीं तुम राखत हौ,

त्योंहीं त्योंहीं रहियतु हैं हो हरि।

और अचरचै पाइ धरौं,

सु तौ कहों कौनके पैंड भरि ॥

जदपि हौं अपनो भायो कियो चाहौं,

कैसे करि सकौं जो तुम राखौ पकरि।

कहि हरिदास पिंजराके जनावरलौं,

तरफराइ रह्यो उड़िबेको कितोउ करि ॥

(७)

काहूको बस नाहिं तुम्हारी कृपा तें,

सब होय बिहारी बिहारिनि।

और मिथ्या प्रपंच काहेको भाषियै,

सो तो है हारनि ॥ १ ॥

जाहि तुमसों हित ताहि तुम हित करौ,
सब सुख कारनि ।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
प्राननिके आधारनि ॥ २ ॥

(८) आसावरी

हित तौ कीजै कमलनैनसों,
जा हित आगे और हित लागौ फीको ।
कै हित कीजै साधुसँगतिसों,
जावै कलमष जी को ॥ १ ॥
हरिको हित ऐसो जैसो रंग मजीठ,
संसार हित कसूंभि दिन दुतीको ।
कहि हरिदास हित कीजै बिहारीसों,
और न निबाहु जानि जी को ॥ २ ॥

(९)

तिनका बयारिके बस ।
ज्यों भावै त्यों उड़ाइ लै जाइ आपने रस ॥

ब्रह्मलोक सिवलोक, और लोक अस ।
कह हरिदास बिचारि देख्यो बिना बिहारी नाहीं जस

(१०)

हरिके नामको आलस क्यों,
करत है रे काल फिरत सर साँधैं ।
हीरा बहुत जवाहर संचे,
कहा भयो हस्ती दर बाँधैं ॥
बेर कुबेर कछू नहिं जानत,
चढ़ो फिरत है काँधैं ।
कहि हरिदास कछू न चलत जब,
आवत अंतकी आँधैं ॥

(११)

मन लगाइ प्रीति कीजै कर करवा सों,
ब्रजबीथिन दीजै सोहिनी ।
बृंदाबन सों बन उपबन सों,
गुंज माल कर पोहिनी ॥

गो गोसुतन सों, मृग मृगसुतन सों,
और तन नेक न जोहिनी ।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सों,
चित ज्यों सिर पर दोहिनी ॥

(१२) कल्यान

हरिको ऐसोइ सब खेल ।
मृग-तृस्ना जग ब्याप रही हैं,
कहूँ बिजोरो न बेल ॥
धनमद जोबनमद औ राजमद,
ज्यों पंछिनमें डेल ॥
कह हरिदास यहै जिय जानौ,
तीरथको सो मेल ॥

(१३)

जौ लौं जीवै तौ लौं हरि भजु रे मन,
और बात सब बादि ।
दिवस चारिको हला भला तू,
कहा लेइगो लादि ॥ १ ॥

मायामद गुनमद जोवनमद,
भूल्यौ नगर बिबादि।
कहि हरिदास लोभ चरपट भयो,
काहेकी लागै फिरादि॥ २॥

(१४)

प्रेमसमुद्र रूपरस गहिरे, कैसे लागै घाट।
वेकारयो दै जानि कहावत,
जानि पनोकी कहा परी बाट॥
काहूको सर परै न सूधो,
मारत गाल गली गली हाट।
कहि हरिदास बिहारिहिं जानौ,
तकौ न औघट घाट॥

(१५) बिहाग

गहौ मन सब रसको रस सार।
लोक बेद कुल करमै तजिये, भजिये नित्य बिहार॥
गृह कामिनि कंचन धन त्यागौ, सुमिरौ स्याम उदार।
कहि हरिदास रीति संतनकी, गादीको अधिकार॥

गदाधर भट्ट

(१६)

सखी, हौं स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाइ गयी वह मूरति,
सूरति माहिं पगी ॥ १ ॥
संग हुतो अपनो सपनो सो,
सोइ रही रस खोई।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि,
नेकु न न्यारो होई ॥ २ ॥
एक जु मेरी अँखियनिमें निसि-
द्योस रह्यो करि भौन।
गाइ चरावन जात सुन्यो सखि,
सो धौं कन्हैया कौन ॥ ३ ॥
कासों कहौं कौन पतियावै,
कौन करै बकवाद।

कैसे कै कहि जात गदाधर,
गूँगेको गुड़ स्वाद ॥ ४ ॥

(१७) विभास

दिन दूलह मेरो कुँवर कन्हैया ।
नितप्रति सखा सिंगार सँवारत,
नित आरती उतारति मैया ॥ १ ॥
नितप्रति गीत बाद्य मंगल धुनि,
नित सुर मुनिवर बिरद कहैया ।
सिरपर श्रीब्रजराज राजवित,
तैसेई ढिग बलनिधि बल भैया ॥ २ ॥
नितप्रति रासबिलास ब्याहबिधि,
नित सुर-तिय सुमननि बरसैया ।
नित नव नव आनंद बारिनिधि,
नित ही गदाधर लेत बलैया ॥ ३ ॥

(१८) ध्रुपद

श्रीगोविंद पद-पल्लव सिर पर बिराजमान,
कैसे कहि आवै या सुखको परिमान ।

ब्रजनरेस देस बसत कालानल हू त्रसत ,

बिलसत मन हुलसत करि लीलामृत पान ॥ १ ॥

भीजे नित नयन रहत प्रभुके गुनग्राम कहत ,

मानत नहिं त्रिविध ताप जानत नहिं आन ।

तिनके मुखकमल दरस पावन पद-रेनु परस ,

अधम जन गदाधरसे पावैं सनमान ॥ २ ॥

(१९) श्री

नमो नमो जय श्रीगोबिंद ।

आनँदमय ब्रज सरस सरोवर,

प्रगटित बिमल नील अरविंद ॥ १ ॥

जसुमति नीर नहे नित पोषित,

नव-नव ललित लाड़ सुखकंद ।

ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित,

प्रसरित सुजस सुवास अमंद ॥ २ ॥

सहचरि जाल मराल संग रँग,

रसभरि नित खेलत सानंद ।

अलि गोपीजन नैन गदाधर,

सादर पिवत रूपमकरंद ॥ ३ ॥

(२०) सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम ।

पीवति खाति रहति निधरक भई,

होत कहा तोकों स्रम ॥ १ ॥

तैं तो सुनी कथा नहिं मोसे,

उधरे अमित महाधम ।

ग्यान ध्यान जप तप तीरथ ब्रत,

जोग जाग बिनु संजम ॥ २ ॥

हेमहरन द्विजद्रोह मान-मद,

अरु पर गुरु दारागम ।

नामप्रताप प्रबल पावकके,

होत जात सलभासम ॥ ३ ॥

इहि कलिकाल कराल ब्याल बिष-

ज्वाल बिषम भोये हम ।

बिनु इहि मंत्र गदाधरके क्यों,

मिटिहैं मोह महातम ॥ ४ ॥

(२१) आसावरी

है हरितें हरिनाम बड़ेरो।

ताकों मूढ़ करत कत झेरो ॥ १ ॥

प्रगट दरस मुचकुंदहिं दीन्हों,

ताहू आयुसु भो तप केरो ॥ २ ॥

सुतहित नाम अजामिल लीनों,

या भवमें न कियो फिरि फेरो ॥ ३ ॥

पर-अपवाद स्वाद जिय राच्यौ,

बृथा करत बकवाद घनेरो ॥ ४ ॥

कौन दसा ह्वैहै जु गदाधर,

हरि हरि कहत जात कहा तेरो ॥ ५ ॥

(२२) सारंग

कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी।

और न कोऊ काटनकों मोह बेरी ॥ १ ॥

काम लोभ आदि ये निरदय अहेरी ।
मिलिकै मन मति मृगी चहूँधा घेरी ॥२॥
रोपी आइ पास पासि दुरासा केरी ।
देत वाहीमें फिरि फिरि फेरी ॥३॥
परी कुपथ कंटक आपदा घनेरी ।
नैक ही न पावति भजि भजन सेरी ॥४॥
दंभके आरंभ ही सतसंगति डेरी ।
करै क्यों गदाधर बिनु करुना तेरी ॥५॥

(२३) दंडक

जयति श्रीराधिके सकलसुखसाधिके
तरुनिमनि नित्य नवतन-किसोरी ।
कृष्णतनु लीन मन रूपकी चातकी
कृष्णमुख हिमकिरिनकी चकोरी ॥१॥
कृष्णदग भृंग विस्रामहित पद्मिनी
कृष्णदग मृगज बंधन सुडोरी ।

कृष्ण-अनुराग मकरंदकी मधुकरी
कृष्ण-गुन-गान रस-सिंधु बोरी ॥२॥
बिमुख परचित्त ते चित्त जाको सदा
करत निज नाहकी चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥३॥

(२४) दंडक

जय महाराज ब्रजराज-कुल-तिलक
गोबिंद गोपीजनानंद राधारमन ।
नंद-नृप-गेहिनी गर्भ आकर रतन
सिष्ट-कष्टद धृष्ट दुष्ट दानव दमन ॥१॥
बल-दलन-गर्ब-पर्वत-बिदारन
ब्रज-भक्त-रच्छा-दच्छ गिरिराजधर धीर।
बिबिध बेला कुसल मुसलधर संग लै
चारु चरणांक चित तरनि-तनया-तीर ॥२॥

कोटि कंदर्प दर्पापहर लावन्य धन्य
वृंदारन्य भूषन मधुर तरु।
मुरलिकानाद पियूषनि महानंदन
बिदित सकल ब्रह्म रुद्रादि सुरकरु ॥३॥
गदाधरबिषे बृष्टि करुना-दृष्टि करु
दीनको त्रिबिध संताप ताप तवन।
मैं सुनी तुव कृपा कृपन-जन-गामिनी
बहुरि पैहै कहा मो बराबर कवन ॥४॥

(२५) हिंडोल

झूलत नागरि नागर लाल।
मंद मंद सब सखी झुलावति,
गावति गीत रसाल ॥१॥
फरहराति पट पीत नीलके,
अंचल चंचल चाल।
मनहुँ परसपर उमँगि ध्यान छबि,
प्रगट भई तिहि काल ॥२॥

सिलसिलात अति प्रिया सीस तें,
लटकति बेनी नाल ।
जनु पिय मुकुट बरहि भ्रमबस तहँ,
ब्याली बिकल बिहाल ॥३॥
मल्ली माल प्रियाकी उरझी,
पिय तुलसी दल माल ।
जनु सुरसरि रबितनया मिलिकै,
सोभित स्रेनि मराल ॥४॥
स्यामल गौर परसपर प्रति छबि,
सोभा बिसद बिसाल ।
निरखि गदाधर रसिक-कुँवरि मन,
परयो सुरस जंजाल ॥५॥

(२६) गौरी

आजु ब्रजराजको कुँवर बनते बन्यो,
देखि आवत मधुर अधर रंजित बेनु ।

मधुर कलगान निज नाम सुनि स्रवन-पुट,

परम प्रमुदित बदन फेरि हूँकति धेनु ॥१॥

मदविघूर्णित नैन मंद बिहँसनि बैन,

कुटिल अलकावली ललित गोपदरेनु ।

ग्वाल-बालनि जाल करत कोलाहलनि,

सृंग दल ताल धुनि रचत संचत चैनु ॥२॥

मुकुटकी लटक अरु चटक पटपीतकी,

प्रगट अंकुरित गोपी मनहिं मैनु ।

कहि गदाधर जु इहि न्याय ब्रजसुंदरी

बिमल बनमालके बीच चाहतु ऐनु ॥३॥

(२७) गारी

सुंदर स्याम सुजानसिरोमनि,

देउँ कहा कहि गारी हो ।

बड़े लोगके औगुन बरनत,

सकुचि उठत मन भारी हो ॥१॥

को करि सकै पिताको निरनौ
जाति-पाँति को जानै हो ।
जाके मन जैसीयै आवत
तैसिय भाँति बखानै हो ॥२॥
माया कुटिल नटी तन चितवत
कौन बड़ाई पाई हो ।
इहि चंचल सब जगत बिगोयो
जहँ तहँ भई हँसाई हो ॥३॥
तुम पुनि प्रगट होइ बारे तें
कौन भलाई कीनी हो ।
मुकति-बधू उत्तम जन लायक
लै अधमनिकों दीनी हो ॥४॥
बसि दस मास गरभ माताके
इहि आसा करि जाये हो ।
सो घर छाँड़ि जीभके लालच
भये हो पूत पराये हो ॥५॥

बारेतें गोकुल गोपिनके
सूने घर तुम डाटे हो।
पैठे तहाँ निसंक रंक लौं
दधिके भाजन चाटे हो ॥६॥
आपु कहाइ धनीको ढोटा
भात कृपन लौं माँग्यो हो।
मान भंग पर दूजैं जाचतु
नैकु सँकोच न लाग्यो हो ॥७॥
लोलुप तातें गोपिनके तुम
सूने भवन ढँढोरे हो।
जमुना न्हात गोप-कन्यनिके
निलज निपट पट चोरे हो ॥८॥
बैनु बजाइ बिलास करत बन
बोलि पराई नारी हो।
ते बातें मुनिराज सभामें
ह्वै निसंक बिस्तारी हो ॥९॥

सब कोउ कहत नंदबाबाको
घर भरयो रतन अमोलै हो।
गर गुंजा सिर मोर-पखौवा
गायनके सँग डोलै हो ॥१०॥
साधु-सभामें बैठनिहारो
कौन तियन सँग नाचै हो।
अग्रज संग राज-मारगमें
कुबजहिं देखत लाचै हो ॥११॥
अपनि सहोदरि आपुहि छल करि
अरजुन संग नसाई हो।
भोजन करि दासी-सुतके घर
जादव-जाति लजाई हो ॥१२॥
लै लै भजे नृपतिकी कन्या
यह धौं कौन बड़ाई हो।
सतभामा गोतमें बिबाही
उलटी चाल चलाई हो ॥१३॥

बहिन पिताकी सास कहाई
नैकहु लाज न आई हो।
ऐसेइ भाँति बिधाता दीन्हीं
सकल लोक ठकुराई हो ॥१४॥
मोहन बसीकरन चट चेटक
मंत्र जंत्र सब जानै हो।
तात भले जु भले सब तुमको
भले भले करि मानै हो ॥१५॥
बरनौं कहा जथा मति मेरी
बेदहु पार न पावै हो।
भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा
गावत ही उर आवै हो ॥१६॥

नन्ददास

(२८)

राम-कृष्ण कहिये उठि भोर ।

अवध-ईस वे धनुष धरे हैं,

यह ब्रज-माखन-चोर ॥१॥

उनके छत्र चँवर सिंहासन,

भरत सत्रुहन लछमन जोर ।

इनके लकुट मुकुट पीताम्बर,

नित गायन-सँग नंद-किसोर ॥२॥

उन सागरमें सिला तराई

इन राख्यौ गिरि नखकी कोर ।

'नंददास' प्रभु सब तजि भजिये,

जैसे निरखत चंद चकोर ॥३॥

(२९)

जो गिरि रुचै तौ बसौ श्रीगोवर्धन,
गाम रुचै तौ बसौ नँदगाम ।
नगर रुचै तौ बसौ श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम ॥ १ ॥
सरिता रुचै तौ बसौ श्रीजमुनातट,
सकल मनोरथ पूरन काम ।
नंददास कानन रुचै तौ,
बसौ भूमि बृंदाबन-धाम ॥ २ ॥

कुम्भनदास

(३०) सारंग

भगतकौं कहा सीकरी काम।
आवत जात पन्हैया टूटी
बिसरि गयो हरिनाम॥ १॥
जाको मुख देखे दुख लागै
ताकों करन परी परनाम।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन
यह सब झूठौ धाम॥ २॥

(३१) धनाश्री

नैन भरि देख्यौ नंदकुमार।
ता दिनतें सब भूलि गयौ हौं
बिसरयो पन परवार॥ १॥
बिन देखे हौं बिकल भयौ हौं
अंग अंग सब हारि।

तातें सुधि है साँवरि मूरतिकी
लोचन भरि भरि बारि ॥ २ ॥
रूप-रास पैमित नहीं मानों
कैसें मिलै लो कन्हाइ ।
कुंभनदास प्रभु गोबरधन-धर
मिलियें बहुरि री माइ ॥ ३ ॥

(३२) धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मनकी ।
जाके लियै देखि मेरी सजनी
लाज गई सब तनकी ॥ १ ॥
धरम जाउ अरु लोग हँसौ सब
अरु गावौ कुल गारी ।
सो क्यौं रहै ताहि बिनु देखे
जा जाकौ हितकारी ॥ २ ॥
रसलुबधक निमिख न छाँड़त है
ज्यों अधीन मृग गानों ।

कुंभनदास सनेह परम श्री–
गोबरधन-धर जानों ॥ ३ ॥

(३३) सारंग

जो पै चोंप मिलनकी होय ।
तौ क्यौं रहै ताहि बिनु देखें
लाख करौ जिन कोय ॥ १ ॥
जो यह बिरह परसपर ब्यापै
जो कछु जीवन बनै ।
लोकलाज कुलकी मरजादा
एकौ चित्त न गनै ॥ २ ॥
कुंभनदास प्रभु जाय तन लागी
और न कछू सुहाय ।
गिरधरलाल तोहि बिनु देखे
छिन छिन कलप बिहाय ॥ ३ ॥

परमानन्ददास

(३४) बिहागरौ

ब्रजके बिरही लोग बिचारे।
बिन गोपाल ठगेसे ठाढ़े
अति दुरबल तन हारे॥ १॥
मात जसोदा पंथ निहारत
निरखत साँझ सकारे।
जो कोइ कान्ह कान्ह कहि बोलत
अँखियन बहत पनारे॥ २॥
यह मथुरा काजरकी रेखा
जे निकसे ते कारे।
परमानंद स्वामि बिनु ऐसे
ज्यों चंदा बिनु तारे॥ ३॥

(३५) कान्हरा

कौन रसिक है इन बातनकौ ।

नंद-नँदन बिन कासों कहिये

सुन री सखी मेरौ दुख या मनकौ ॥ १ ॥

कहाँ वह जमुनापुलिन मनोहर

कहाँ वह चंद सरद रातिनकौ ।

कहाँ वह मंद सुगंध अमल रस

कहाँ वह षटपद जलजातनकौ ॥ २ ॥

कहाँ वह सेज पौढ़िबौ बनकौ

फूल बिछौना मृदु पातनकौ ।

कहाँ वह दरस परस परमानँद

कोमल तन कोमल गातनकौ ॥ ३ ॥

(३६) सारंग

जियकी साधन जिय ही रही री ।

बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए

बिलपत कुंज अहीरी ॥ १ ॥

एक दिन साँज समीप यहि मारग
बेचन जात दही री।
प्रीतके लएँ दानमिस मोहन
मेरी बाँह गही री॥ २॥
बिन देखे घड़ि जात कलप सम
बिरहा अनल दही री।
परमानंद स्वामि बिन दरसन
नैन न नींद बही री॥ ३॥

(३७) बिलावल

जसौदा तेरे भागकी कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुरलभ
सो प्रगटे हैं आय॥ १॥
सिब नारद सनकादि महामुनि
मिलिबे करत उपाय।
ते नँदलाल धूरि-धूसर-बपु
रहत गोद लिपटाय॥ २॥

रतन जड़ित पौढ़ाय पालनै
बदन देखि मुसुकाइ ।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी
परमानंद जस गाइ ॥ ३ ॥

(३८) पूरबी

मेरो माई माधोसों मन लाग्यौ ।
मेरौ नैन अरु कमलनैनकों
इकठौरां करि मान्यौ ॥ १ ॥
लोक बेदकी कानि तजी मैं
न्यौती अपने आन्यौ ।
इक गोबिंद चरनके कारन
बैर सबनसों ठान्यौ ॥ २ ॥
अब को भिन्न होय मेरी सजनी !
दूध मिल्यौ जैसे पान्यौ ।
परमानंद मिली गिरधरसों
है पहली पहचान्यौ ॥ ३ ॥

कृष्णदास

(३९) देवगंधार

जबतें स्याम सरन हौं पायौ ।
तबतें भैंट भई श्रीबल्लभ,
निज पति नाम बतायौ ॥ १ ॥
और अविद्या छाँड़ि मलिन मति,
स्रुतिपथ आय दृढ़ायौ ।
कृष्णदास जन चहुँ जुग खोजत,
अब निहचै मन आयौ ॥ २ ॥

(४०) बिलावल

बाल दसा गोपालकी सब काहू प्यारी ।
लै लै गोद खिलावहीं, जसुमति महतारी ॥ १ ॥
पीत झँगुलि तन सोहहीं सिर कुलहि बिराजै ।
छुद्रघंटिका कटि बनी, पाय नूपुर बाजै ॥ २ ॥

मुरि मुरि नाचै मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहै ।
कृष्णदास प्रभु नंदके आँगनमें सोहै ॥ ३ ॥

(४१) गौरी

मो मन गिरिधरछबिपै अटक्यौ ।
ललित त्रिभंग चालपै चलिकै,
चिबुक चारु गड़ि ठटक्यौ ॥ १ ॥
सजल स्याम घन बरन लीन है,
फिर चित अनत न भटक्यौ ।
कृष्णदास किये प्रान निछावर,
यह तन जग सिर पटक्यौ ॥ २ ॥

व्यासजी

(४२) सारंग

राधा-वल्लभ मेरौ प्यारौ ।
सरबोपरि सबहीकौ ठाकुर,
सब सुखदानि हमारौ ॥ १ ॥
ब्रज बृंदाबन नाइक सेवा-
लाइक स्याम उज्यारौ ।
प्रीत रीत पहचानै जानै
रसिकनकौ रखवारौ ॥ २ ॥
स्याम कमल-दल-लोचन मोचन,
दुख नैननकौ तारौ ।
अवतारी सब अवतारनकौ
महतारी महतारौ ॥ ३ ॥
मूरतिवंत काम गोपिनको
गाय गोपको गारौ ।

ब्यासदासकौं प्रान सजीवन
छिनभर हृदय न टारौ ॥ ४ ॥

(४३) सारंग

बृंदाबनकी सोभा देखे मेरे नैन सिरात ।
कुंज निकुंज पुंज सुख बरसत
हरषत सबकौ गात ॥ १ ॥
राधा मोहनके निज मंदिर
महाप्रलय नहिं जात ।
ब्रह्मातें उपज्यौ न अखंडित
कबहूँ नाहिं नसात ॥ २ ॥
फनिपर रवि तरि नहिं बिराट महँ
नहिं संध्या नहिं प्रात ।
माया कालरहित नित नूतन
सदा फूल फल पात ॥ ३ ॥
निरगुन सगुन ब्रह्मतें न्यारौ
बिहरत सदा सुहात ।

व्यास विलास रास अदभुत गति,
निगम अगोचर बात ॥ ४ ॥

(४४) चर्चरी

नव चक्र चूड़ा नृपति मन साँवरौ,
राधिका तरुनिमनि पट्टरानी ।
सेस ग्रह आदि बैकुंठ परिजंत सब
लोक थानैत ब्रज राजधानी ॥ १ ॥
मेघ छ्यानवै कोटि बाग सींचत जहाँ,
मुक्ति चारौ तहाँ भरति पानी ।
सूर ससि पाहरू पवन जन इंदिरा,
चरनदासी भाट निगम बानी ॥ २ ॥
धर्म कुतवाल सुक सूत नारद चारु,
फिरत चर चारि सनकादि ग्यानी ।
सत्तगुन पौरिया काल बँधुवा जहाँ,
कर्म बस काम रति सुख निसानी ॥ ३ ॥

कनक मरकत धरनि कुंज कुसुमिति महल,
मध्य कमनीय सयनीय ठानी।
पल न बिछुरत दुऊ जात नहिं तहँ कोऊ,
ब्यास महलनि लिये पीकदानी ॥ ४ ॥

(४५) धनाश्री

हरिदासनके निकट न आवत प्रेत पितर जमदूत।
जोगी भोगी संन्यासी अरु पंडित मुंडित धूत ॥
ग्रह गनेस सुरेस सिवा सिव डर करि भागत भूत।
सिधि निधि बिधिनिषेध हरिनामहिं डरपत रहत कुपूत
सुख-दुख पाप-पुन्य मायामय ईति-भीति आकूत।
सबकी आसत्रास तजि ब्यासहि भावत भगत सपूत ॥

(४६) सारंग

रसिक अनन्य हमारी जाति।
कुलदेवी राधा, बरसानौ खेरौ,
ब्रजबासिन सों पाँति ॥ १ ॥

गोत गोपाल, जनेऊ माला,
सिखा सिखंडि, हरि-मंदिर भाल।
हरिगुन नाम बेद धुनि सुनियत,
मूँज पखावज, कुस करताल ॥ २ ॥
साखा जमुना, हरि-लीला षटकरम
प्रसाद प्रान धन रास।
सेवा बिधि-निषेध जड़ संगति,
बृत्ति सदा बृंदाबन बास ॥ ३ ॥
समृति भागवत, कृष्ण नाम संध्या,
तरपन गायत्री जाप।
बंसी रिषि जजमान कलपतरु
व्यास न देत असीस सराप ॥ ४ ॥

(४७)

ऐसे ही बसिये ब्रजबीथिन।
साधुनके पनवारे चुनि चुनि,
उदर पोषियत सीथिन ॥ १ ॥

घूरनमेंके बीनि चिनगटा
रच्छा कीजै सीतन ।
कुंज कुंज प्रति लोटि लगै उड़ि
रज ब्रजकी अंगीतन ॥ २ ॥
नितप्रति दरस स्याम-स्यामाको
नित जमुना जल पीतन ।
ऐसेहि ब्यास रुचै तन पावन
ऐसेहि मिलत अतीतन ॥ ३ ॥

(४८)

जैये कौनके अब द्वार ।
जो जिय होय प्रीति काहूके दुख सहिये सौ बार ॥
घर-घर राजस तामस बाढ़्यौ, धन-जोबनकौ गार ।
काम-बिबस ह्वै दान देत नीचनकों होत उदार ॥
साधु न सूझत बात न बूझत ये कलिके ब्यौहार ।
ब्यासदास कत भाजि उबरियै परियै माँझीधार ॥

(४९)

कहा कहा नहिं सहत सरीर ।
स्याम-सरन बिनु करम सहाइन,
जनम-मरनकी पीर ॥ १ ॥
करुनावंत साधु-संगति बिनु,
मनहिं देय को धीर ।
भगति भागवत बिनु को मेटै,
सुख दे दुखकी भीर ॥ २ ॥
बिनु अपराध चहूँ दिसि बरषत
पिसुन बचन अति तीर ।
कृष्ण-कृपा कवचीतें उबरै
पावै तबही सीर ॥ ३ ॥
चेतहु भैया, बेगि बढ़ी कलि-
काल नदी गंभीर ।
व्यास बचन बलि बृंदाबन बसि,
सेवहु कुंज कुटीर ॥ ४ ॥

(५०)

भजौ सुत, साँचे स्याम पिताहि।

जाके सरन जात ही मिटिहै
दारुन दुखकी दाहि ॥ १ ॥

कृपावंत भगवंत सुने मैं
छिनि छौंड़ौ जिनि ताहि।

तेरे सकल मनोरथ पूजैं
जो मथुरा लौं जाहि ॥ २ ॥

वै गोपाल दयाल दीन तू,
करिहैं कृपा निबाहि।

और न ठौर अनाथ दुखिनकौं
मैं देख्यौ जग माँहि ॥ ३ ॥

करुना बरुनालयकी महिमा
मोपै कही न जाहि।

ब्यासदासके प्रभुको सेवत
हारि भई कहु काहि ? ॥ ४ ॥

(५१) सारंग

धरम दुरयौ कलिराज दिखाई ॥
कीनों प्रगट प्रताप आपनौ
सब बिपरीति चलाई ।
धन भौ मीत, धरम भौ बैरी
पतितनसों हितवाई ॥ १ ॥
जोगी जती तपी संन्यासी
ब्रत छाँड़यौ अकुलाई ।
बरनास्रमकी कौन चलावै
संतनहूमें आई ॥ २ ॥
देखत संत भयानक लागत
भावते ससुर जमाई ।
संपति सुकृत सनेह मान चित
ग्रह-ब्यौहार बड़ाई ॥ ३ ॥
कियो कुमंत्री लोभ आपुनों
महामोह जु सहाई ।

काम क्रोध मद मोह मत्सरा
　　दीन्हीं देस दुहाई ॥ ४ ॥
दान लैनकौं बड़े पातकी
　　मचलनकौं बँभनाई ।
लरन मरनकौं बड़े तामसी
　　बारौं कोटि कसाई ॥ ५ ॥
उपदेसनकौं गुरू गुसाईं
　　आचरनैं अधमाई ।
ब्यासदासके सुकृत साँकरे-
　　में गोपाल सहाई ॥ ६ ॥

(५२)

　　साधन बैरागी जड़ बंग ।
धातु रसायन औषध सेवत
　　निसिदिन बढ़त अनंग ॥ १ ॥
सुक-बचननकौ रंग न लाग्यौ
　　भयौ न संसै भंग ।

बिष बिकार गुन उपजै बित लगि
सबै करत चित भंग ॥ २ ॥
बनमें रहत गहत कामिनि कुच
सेवत पीन उतंग ।
धनि धनि साधु ! दंभकी मूरति,
दियो छाँड़ि हरि-संग ॥ ३ ॥
लोभ बचन बाननि अँग-अंगनि
सोभित निकर निषंग ।
व्यास आस जम पासि गरे,
तिहि भावै राग न रंग ॥ ४ ॥

(५३)

जो दुख होत बिमुख घर आये ।
ज्यौं कारौ लागे कारी निसि,
कोटिक बीछू खाये ॥ १ ॥
दुपहर जेठ जरत बारूमें
घायन लौन लगाये ।

काँटन माँझ फिरैं बिनु पनहीं,
मूड़ैं टोला खाये ॥ २ ॥
ज्यों बाँझहिं दुख होत सौतिकौ
सुंदर बेटा जाये ।
देखत ही मुख होत जितौ दुख
बिसरत नहिं बिसराये ॥ ३ ॥
भटकत फिरत निलज बरजत ही
कूकर ज्यों झहराये ।
गारी देत बिलग नहिं मानत
फूलत दमरी पाये ॥ ४ ॥
अति दुख दुष्ट जगतमें जेते
नैक न मेरे भाये ।
भूलि दरस नहिं कीजौ वाकौ,
ब्यास बचन बिसराये ॥ ५ ॥

(५४)

सुने न देखे भगत भिखारी।
तिनके दाम-कामकौ लोभ न
जिनके कुंजबिहारी ॥ १ ॥
सुक नारद अरु सिव सनकादिक,
जे अनुरागी भारी।
तिनको मत भागवत न समुझै
सबकी बुधि पचि हारी ॥ २ ॥
रसना इंद्री दोऊ बैरिन
जिनकी अनी अन्यारी।
करि आहार बिहार परसपर
बैर करत बिभचारी ॥ ३ ॥
बिषइनिकी परतीति न हरिसों
प्रीति रीति बाजारी।
ब्यास आस-सागरमें बूड़ैं
आई भगति बिसारी ॥ ४ ॥

(५५)

जो सुख होत भगत घर आये।

सो सुख होत नहीं बहु संपति,
बाँझहिं बेटा जाये॥ १॥

जो सुख होत भगत चरनोदक
पीवत गात लगाये।

सो सुख सपनेहू नहिं पैयत
कोटिक तीरथ न्हाये॥ २॥

जो सुख भगतनकौ मुख देखत
उपजत दुख बिसराये।

सो सुख होत न कामिहिं कबहूँ
कामिनि उर लपटाये॥ ३॥

जो सुख कबहुँ न पैयत पितु घर
सुतकौ पूत खिलाये।

सो सुख होत भगत बचननि सुनि
नैननि नीर बहाये॥ ४॥

जो सुख होत मिलत साधुनसों
छिन छिन रंग बढ़ाये ।
सो सुख होत न नेक व्यासकौं
लंक सुमेरहु पाये ॥ ५ ॥

(५६)

हरि बिनु को अपनौं संसार ।
माया मोह बँध्यो जग बूड़त,
काल नदीकी धार ॥ १ ॥
जैसे संघट होत नावमें
रहत न पैले पार ।
सुत संपति दारा सों ऐसे
बिछुरत लगै न बार ॥ २ ॥
जैसे सपने रंक पाय निधि
जानै कछू न सार ।
ऐसे छिनभंगुर देहीके
गरबहि करत गँवार ॥ ३ ॥

जैसे अँधरे टेकत डोलत
गनत न खाइ पनार ।
ऐसे ब्यास बहुत उपदेसे
सुनि-सुनि गये न पार ॥ ४ ॥

(५७)

कहत सुनत बहुतै दिन बीते
भगति न मनमें आई ।
स्यामकृपा बिनु, साधुसंग बिनु
कहि कौने रति पाई ॥ १ ॥
अपने अपने मत-मद भूले
करत आपनी भाई ।
कह्यौ हमारौ बहुत करत हैं,
बहुतनमें प्रभुताई ॥ २ ॥
मैं समझी सब काहु न समझी,
मैं सबहिन समझाई ।

भोरे भगत हुते सब तबके,
हमरे बहु चतुराई ॥ ३ ॥
हमहीं अति परिपक्क भये
औरनिकै सबै कचाई ।
कहनि सुहेली रहनि दुहेली
बातनि बहुत बड़ाई ॥ ४ ॥
हरिमंदिर माला धरि, गुरु करि
जीवनके सुखदाई ।
दया दीनता दासभाव बिनु
मिलैं न व्यास कन्हाई ॥ ५ ॥

(५८) कान्हरा

परमधन राधे नाम अधार ।
जाहि स्याम मुरलीमें टेरत,
सुमिरत बारंबार ॥ १ ॥

जंत्र-मंत्र औ बेद तंत्रमें,

सबै तारकौ तार ।

श्रीसुक प्रगट कियो नहिं यातैं

जानि सारकौ सार ॥ २ ॥

कोटिन रूप धरे नँद-नंदन,

तऊ न पायौ पार ।

ब्यासदास अब प्रगट बखानत,

डारि भारमें भार ॥ ३ ॥

श्रीभट्ट

(५९) पद

मदनगुपाल, सरन तेरी आयौ ।
चरनकमलकी सरन दीजिये,
चेरौ करि राखौ घर जायौ ॥ १ ॥
धनि-धनि मात-पिता सुत-बंधू,
धनि जननी जिन गोद खिलायौ ।
धनि-धनि चरन चलत तीरथकों,
धनि गुरुजन हरिनाम सुनायौ ॥ २ ॥
जे नर बिमुख भये गोविंदसों,
जनम अनेक महादुख पायौ ।
श्रीभटके प्रभु दियौ अभय पद,
जम डर्‌यौ जब दास कहायौ ॥ ३ ॥

(६०)

ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी ।
मोहन कुंज मोहन बृंदाबन मोहन जमुनापानी ॥ १ ॥

मोहन नारि सकल गोकुलकी बोलति अमरतबानी ।
श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनि राधारानी ॥२॥

(६१)

सेव्य हमारे हैं पिय प्यारे बृंदा-बिपिन-बिलासी ।
नँद-नंदन बृषभानु-नंदिनी चरन अनन्य उपासी १
मत्त प्रनयबस सदा एकरस बिबिध निकुंजनिवासी ।
श्रीभट जुगुलरूप बंसीबट सेवत सब सुखरासी ।२।

(६२)

स्यामा स्याम पद पावैं सोई ।
मन-बच-क्रम करि सदा नित्य जेहि
हरि-गुरु पदपंकज रति होई ॥ १ ॥
नंदसुवन बृषभानुसुता पद
भजै तजै मन आनै जोई ।
श्रीभट अटकि रहे स्वामीपन
आन ब्रतै मानै सब छोई ॥ २ ॥

(६३)

जुगुलकिसोर हमारे ठाकुर ।
सदा सरबदा हम जिनके हैं,
जनम-जनम घरजाये चाकर ॥१॥
चूक परै परिहरैं न कबहूँ,
सबही भाँति दयाके आकर ।
जै श्रीभट्ट प्रगट त्रिभुवनमें,
प्रनतनि पोषत परम सुधाकर ॥ २ ॥

(६४)

बलि-बलि श्रीराधे-नँदनँदना ।
मेरे मनकी अमित अघटना को जानै तुम बिना ॥
भलेई चारु चरन दरसाये ढूँढ़त फिरिहौं बृंदाबना ।
जै श्रीभट स्यामा स्यामरूप पै निवछावर तन-मना ॥

(६५)

राधे, तेरे प्रेमकी कापै कहि आवै ।
तेरीसी गोपकी तोपै बनि आवै ॥

मन-बच-क्रम दुरगम सदा तापै चरन छुवावै ।
जै श्रीभट मति बृषभानु तेज प्रताप जनावै ॥

(६६)

बसौ मेरे नैननिमें दोउ चंद ।
गौरबदनि बृषभानुनंदिनी,
स्यामबरन नँदनंद ॥ १ ॥
गोकुल रहे लुभाय रूपमें,
निरखत आनँदकंद ।
जै श्रीभट्ट प्रेमरस-बंधन,
क्यों छूटै दृढ़ फंद ॥ २ ॥
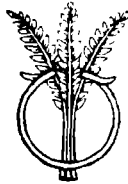
सूरदास मदनमोहन

(६७) बधाई

नंदजू मेरे मन आनंद भयो, हौं
गोबरधन तें आयौ।
तुम्हरे पुत्र भयो, हौं सुनिकै
अति आतुर उठि धायौ ॥ १ ॥
बंदीजन अरु भिच्छुक सुनि सुनि
देस देस तें आये।
इक पहले ही आसा लागे
बहुत दिनन तें छाये ॥ २ ॥
ते पहिरैं कंचन मनि मुकता
नाना बसन अनूप।
मोहि मिले मारगमें मानों
जात कहूँके भूप ॥ ३ ॥

तुम तौ परम उदार नंदजू
जोइ माँग्या सोइ दीनौं ।
ऐसो और कौन त्रिभुवनमें
तुम सरि साकौ कीनौं ॥ ४ ॥
लच्छ हेतु तौ पर्यौ रहौं हौं
बिनु देखे नहिं जैहौं ।
नंदराइ सुनि बिनती मेरी
तबै बिदा भलि ह्वैहौं ॥ ५ ॥
दीजै मोहिं कृपा करि साई
जो हौं आयौ माँगन ।
जसुमति-सुत अपने पाइनि चलि
खेलत आवै आँगन ॥ ६ ॥
जब तुम मदनमोहन कहि टेरौ
यह सुनि हौं घर जाउँ ।
हौं तौ तेरो घरको ढाढ़ी
सूरदास मो नाउँ ॥ ७ ॥

(६८)

प्रगट भई सोभा त्रिभुवनकी भानु गोपके आइ ।
अदभुत रूप देखि ब्रजबनिता रीझीं लेत बलाइ ॥
नहिं कमला, नहिं सची, नहीं रति उपमाहू न समाइ ।
जा हित प्रगट भए ब्रजभूषन धन्य पिता धन माइ ॥
जुग जुग राज करो दोऊ जन इत तुव उत नँदराइ ।
उनके मदनमोहन तेरे स्यामा सूरदास बलि जाइ ॥

(६९) देस

मेरे गति तुमहीं अनेक तोष पाऊँ ।
चरन-कमल-नख-मनिपर बिषे-सुख बहाऊँ ।
घर घर जो डोलौं तौ हरि तुम्हैं लजाऊँ ॥१॥
तुम्हरौ कहाइ कहौ कौनकौ कहाऊँ ।
तुमसे प्रभु छाँड़ि कहा दीननकौं धाऊँ ॥२॥
सीस तुम्हैं नाय कहौ कौनकौ नवाऊँ ।
कंचन उर हार छाँड़ि काच क्यों बनाऊँ ॥३॥

सोभा सब हानि करूँ जगतकौं हँसाऊँ ।
हाथीतें उतरि कहा गदहा चढ़ि धाऊँ ॥४॥
कुमकुमकौ लेप छाँड़ि काजर मुँह लाऊँ ।
कामधेनु घरमें तज अजा क्यौं दुहाऊँ ॥५॥
कनकमहल छाँड़ि क्योंऽब परनकुटी छाऊँ ।
पाइन जो पेलौ प्रभु तौ न अनत जाऊँ ॥६॥
सूरदास मदनमोहन जनम जनम गाऊँ ।
संतनकी पनहीकौ रच्छक कहाऊँ ॥७॥

(७०) बिलावल

मधुके मतवारे स्याम, खोलौ प्यारे पलकैं ।
सीस मुकुट लटा छुटी और छुटी अलकैं ॥१॥
सुर-नर-मुनि द्वार ठाढ़े दरसहेतु किलकैं ।
नासिकाके मोति सोहैं बीच लाल ललकैं ॥२॥
कटि पीतांबर मुरली कर स्रवन कुँडल झलकैं ।
सूरदास मदनमोहन दरस दैहौ भलकैं ॥३॥

(७१) देस

चलौ री, मुरली सुनिये, कान्ह बजाई जमुनातीर ।
तजि लोकलाज कुलकी कानि गुरुजनकी भीर ॥
जमुनाजल थकित भयो बछा न पावैं छीर ।
सुरबिमान थकित भये थकित कोकिल-कीर ॥
देहकी सुधि बिसरि गई बिसरौ तनकौ चीर ।
मात-तात बिसर गये बिसरे बालक-बीर ॥
मुरली-धुनि मधुर बाजै कैसेकै धरौं धीर ।
सूरदास मदनमोहन जानत हौ परपीर ॥

नागरीदास

(७२)

हमारै मुरलीवारौ स्याम ।

बिनु मुरली बनमाल चन्द्रिका,

नहिं पहिचानत नाम ॥१॥

गोपरूप बृंदाबन-चारी,

ब्रज-जन पूरन काम ।

याहीसों हित चित्त बढ़ौ नित,

दिन-दिन पल छिन जाम ॥२॥

नंदीसुर गोबरधन गोकुल,

बरसानों बिस्राम ।

नागरिदास द्वारका मथुरा,

इनसों कैसो काम ॥३॥

(७३)

चरचा करी कैसे जाय ।

बात जानत कछुक हमसों, कहत जिय थहराय ॥

कथा अकथ सनेहकी, उर नाहिं आवत और ।

बेद समृती उपनिषदकों, रही नाहिंन ठौर ॥

मनहिमें है कहनि ताकी, सुनत स्रोता नैन ।

सोऽब नागर लोग बूझत, कहि न आवत बैन ॥

(७४)

जो मेरे तन होते दोय ।

मैं काहूतें कछु नहिं कहतौ,

मोतें कछु कहतौ नहिं कोय ॥१॥

एक जु तन हरि-बिमुखनके

सँग रहतो देस-बिदेस ।

बिबिध भाँतिके जग-दुख-सुख जहँ

नहीं भगति-लवलेस ॥२॥

एक जु तन सतसंग रंग रँगि,

रहतौ अति सुख पूर।

जनम सफल कर लेतौ ब्रज बसि,

जहँ ब्रज जीवनमूर ॥३॥

द्वै तन बिन द्वै काज न ह्वैहैं,

आयु सु छिन-छिन छीजै।

नागरिदास एक तनते अब,

कहौ कहा करि लीजै ॥४॥

(७५)

दरपन देखत, देखत नाहीं।

बालपन फिरि प्रगट स्याम कच,

बहुरि स्वेत ह्वै जाहीं ॥१॥

तीन रूप या मुखके पलटे,

नहिं अयानता छूटी।

नियरे आवत मृत्यु न सूझत,

आँखें हियकी फूटी ॥२॥

कृष्ण-भगति-सुख लेत न अजहूँ,
बृद्ध देह दुखरासी ।
नागरिया सोई नर निहचै,
जीवत नरकनिवासी ॥ ३ ॥

(७६)

हरि जू अजुगत जुगत करेंगे ।
परबत ऊपर बहल काँचकी, नीके लै निकरेंगे ॥
गहिरे जल पाषान नाव बिच, आछी भाँति तरेंगे ।
मैंन तुरंग चढ़े पावक बिच, नाहीं पिघरि परेंगे ॥
याहू ते असमंजस हो किन, प्रभु दृढ़ कर पकरेंगे ।
नागर सब आधीन कृपाके, हम इन डर न डरेंगे ॥

(७७)

दुहुँ भाँतिनकौ मैं फल पायौ ।
पाप किये ताते बिमुखन सँग, देस-देस भटकायौ ॥
तुच्छ कामना हित कुसंग बसि, झूठे लोभ लुभायौ ।
कौन पुन्य अब बृंदाबन, बरसाने सुबस बसायौ ॥

आनँदनिधि ब्रज अनन्य-मंडली, उर लगाय अपनायौ
सुनि बेहूकों दुरलभ सो सब, रस-बिलास दरसायौ ॥
स्यामा-स्याम दास नागरकौ, कियौ मनोरथ भायौ ॥

(७८)

हमारी सब ही बात सुधारी ।
कृपा करी श्रीकुंजबिहारिनि, अरु श्रीकुंजबिहारी ॥
राख्यौ अपने बृंदाबनमें, जिहि ठाँ रूप उजारी ।
नित्य केलि आनंद अखंडित, रसिक संग सुखकारी ॥
कलह कलेस न व्यापै इहि ठाँ, ठौर बिस्व तें न्यारी ।
नागरिदासहिं जन्म जितायो, बलिहारी बलिहारी ॥

(७९)

भगति बिन हैं सब लोग निखट्टू ।
आपसमें लड़िबे भिड़िबेकों, जैसे जंगी टट्टू ॥
नित उनकी मति भ्रमत रहत है, जैसे लोलुप लट्टू ॥
नागरिया जगमें वे उछरत, जिहि बिधि नटके बट्टू ॥

(८०)

किते दिन बिन बृंदाबन खोये।
योंही बृथा गये ते अब लौं,
राजस रंग समोये ॥ १ ॥
छाँड़ि पुलिन फूलनिकी सैया,
सूल सरनि सिर सोये।
भीजे रसिक अनन्य न दरसे,
बिमुखनिके मुख जोये ॥ २ ॥
हरि बिहारकी ठौरि रहे नहिं,
अति अभाग्य बल बोये।
कलह सराय बसाय भठ्यारी,
माया राँड़ बिगोये ॥ ३ ॥
इक रस ह्याँके सुख तजिकै ह्वाँ,
कबौं हँसे कबौं रोये।
कियौ न अपनो काज, पराये
भार सीसपर ढोये ॥ ४ ॥

पायौ नहिं आनंद लेस मैं,

सबै देस टकटोये ।

नागरिदास बसै कुंजनमें,

जब सब बिधि सुख भोये ॥ ५ ॥

(८१)

ब्रजबासीतें हरिकी सोभा ।

बैन अधर छबि भये त्रिभंगी,

सो वा ब्रजकी गोभा ॥ १ ॥

ब्रज बन धातु बिचित्र मनोहर,

गुंज-पुंज अति सोहैं ।

ब्रजमोरनिको पंख सीसपर,

ब्रज-जुवती मन मोहैं ॥ २ ॥

ब्रज-रज नीकी लगति अलकपै,

ब्रज द्रुम फल अरु माल ।

ब्रज गउवनके पाछे आछे,

आवत मद गज चाल ॥ ३ ॥

बीच लाल ब्रजचंद सुहाये,
चहूँ ओर ब्रज गोप।
नागरिया परमेसुरहूकी
ब्रज तें बाढ़ी ओप ॥ ४ ॥

(८२)

ब्रज-सम और कोउ नहिं धाम।
या ब्रजमें परमेसुरहूके
सुधरे सुंदर नाम ॥ १ ॥
कृष्ण नाँव यह सुन्यो गर्गतें,
कान्ह कान्ह कहि बोलैं।
बालकेलि-रस मगन भये सब,
आनँद-सिंधु कलोलैं ॥ २ ॥
जसुदानंदन, दामोदर, नव-
नीत-प्रिय, दधिचोर।
चीरचोर, चितचोर, चिकनियाँ,
चातुर, नवलकिसोर ॥ ३ ॥

राधा-चंद-चकोर, साँवरौ,
गोकुलचँद, दधिदानी ।
श्रीबृंदाबनचंद, चतुर चित,
प्रेम-रूप-अभिमानी ॥ ४ ॥
राधारमन, सु राधाबल्लभ,
राधाकांत, रसाल ।
बल्लभ-सुत, गोपीजन-बल्लभ,
गिरिवर-धर, छबिजाल ॥ ५ ॥
रासबिहारी, रसिकबिहारी,
कुंजबिहारी, स्याम ।
बिपिनबिहारी, बंकबिहारी,
अटल बिहारऽभिराम ॥ ६ ॥
छैलबिहारी, लालबिहारी,
बनवारी, रसकंद ।
गोपीनाथ, मदनमोहन, पुनि
बंसीधर गोबिंद ॥ ७ ॥

ब्रजलोचन, ब्रजरमन, मनोहर,
ब्रजउत्सव, ब्रजनाथ ।
ब्रजजीवन, ब्रजवल्लभ सबके,
ब्रजकिसोर, सुभगाथ ॥ ८ ॥
ब्रजमोहन, ब्रजभूषन, सोहन,
ब्रजनायक ब्रजचंद ।
ब्रजनागर, ब्रजछैल, छबीले,
ब्रजवर, श्रीनँदनंद ॥ ९ ॥
ब्रज आनँद, ब्रजदूलह नितहीं,
अति सुंदर ब्रजलाल ।
ब्रज गउवनके पाछे आछे,
सोहत ब्रजगोपाल ॥ १० ॥
ब्रज-संबंधी नाम लेत ये,
ब्रजकी लीला गावै ।
नागरिदासहि मुरलीवारो,
ब्रजको ठाकुर भावै ॥ ११ ॥

भगवतरसिक

(८३) पद

लखी जिन लालकी मुसक्यान ।
तिनहिं बिसरी बेदबिधि, जप,
जोग, संयम, ध्यान ॥ १ ॥
नेम, ब्रत, आचार, पूजा,
पाठ, गीता, ज्ञान ।
रसिक भगवत दृग दई असि,
ऐंचिकै मुख म्यान ॥ २ ॥

(८४)

परसपर दोउ चकोर दोउ चंदा ।
दोउ चातक, दोउ स्वाती, दोउ घन,
दोउ दामिनी अमंदा ॥ १ ॥
दोउ अरबिंद, दोऊ अलि लंपट,
दोउ लोहा, दोउ चुंबक ।

दोउ आशिक, महबूब दोउ मिलि,
जुरे जुराफा अंबक ॥ २ ॥
दोउ मेघ, दोउ मोर, दोउ मृग,
दोउ राग-रस-भीने ।
दोउ मनि बिसद, दोउ बर पन्नग,
दोउ बारि, दोउ मीने ॥ ३ ॥
भगवतरसिक बिहारिनि प्यारी,
रसिक बिहारी प्यारे ।
दोउ मुख देखि जियत अधरामृत
पियत होत नहिं न्यारे ॥ ४ ॥

(८५) सारंग

बेषधारी हरिके उर सालैं ।
लोभी, दंभी, कपटी नट-से,
सिस्नोदरकों पालैं ॥ १ ॥
गुरू भये घर घरमें डोलैं,
नाम धनीको बेंचैं ।

परमारथ सपने नहिं जानैं,
　　पैसनहीकों खैंचैं ॥ २ ॥
कबहुँक बकता है बनि बैठे,
　　कथा भागवत गावैं ।
अरथ अनरथ कछु नहिं भाषैं,
　　पैसनहीकों धावैं ॥ ३ ॥
कबहुँक हरिमंदिरकों सेवैं,
　　करैं निरंतर बासा ।
भाव भगतिकौ लेस न जानैं,
　　पैसनहीकी आसा ॥ ४ ॥
नाचैं, गावैं, चित्र बनावैं,
　　करैं काव्य चटकीली ।
साँच बिना हरि हाथ न आवै,
　　सब रहनी है ढीली ॥ ५ ॥
बिनु बिबेक-बैराग, भगति बिनु,
　　सत्य न एकौ मानौ ।
भगवतबिमुख कपट चतुराई,
　　सो पाखंडै जानौ ॥ ६ ॥

(८६)

इतने गुन जामें सो संत ।

श्रीभागवत मध्य जस गावत,

श्रीमुख कमलाकंत ॥ १ ॥

हरिकौ भजन साधुकी सेवा,

सर्वभूत पर दाया ।

हिंसा, लोभ, दंभ, छल त्यागै,

बिषसम देखै माया ॥ २ ॥

सहनसील, आसय उदार अति,

धीरजसहित, बिबेकी ।

सत्यबचन सबकों सुखदायक,

गहि अनन्य ब्रत एकी ॥ ३ ॥

इंद्रीजित, अभिमान न जाके,

करै जगतकों पावन ।

भगवतरसिक तासुकी संगति

तीनहुँ ताप नसावन ॥ ४ ॥

(८७) गौरी

नमो नमो बृंदाबनचंद ।
नित्य, अनंत, अनादि, एकरस,
पिय प्यारी बिहरत स्वच्छंद ॥ १ ॥
सत्त-चित्त-आनंदरूपमय
खग-मृग, द्रुम-बेली बर बृंद ।
भगवतरसिक निरंतर सेवत,
मधुप भये पीवत मकरंद ॥ २ ॥

(८८) ईमन

जय जय रसिक रवनीरवन ।
रूप, गुन, लावन्य, प्रभुता, प्रेम पूरन भवन ॥
बिपति जनकी भानबेकों, तुम बिना कहु कवन ।
हरहु मनकी मलिनता, ब्यापै न माया पवन ॥
बिषय रस इंद्री अजीरन, अति करावहु पवन ।
खोलिये हियके नयन, दरसै सुखद बन अवन ॥
चतुर, चिंतामनि, दयानिधि, दुसह दारिद दवन ।
मेटिये भगवत ब्यथा, हँसि भेंटिये तजि मवन ॥

नारायण स्वामी

(८९) आसावरी

सखि, मेरे मनकी को जानै ।
कासों कहौं सुनै जो चित दै,
हितकी बात बखानै ॥ १ ॥
ऐसो को है अंतरजामी,
तुरत पीर पहिचानै ।
नारायन जो बीत रही है,
कब कोई सच मानै ॥ २ ॥

(९०) सोरठ

जाहि लगन लगी घनस्यामकी ।
धरत कहूँ पग, परत हैं कितहूँ,
भूल जाय सुधि धामकी ॥ १ ॥
छबि निहार नहिं रहत सार कछु,
घरि पल निसिदिन जामकी ।

जित मुँह उठै तितै ही धावै,
सुरति न छाया घामकी ॥ २ ॥
अस्तुति निंदा करौ भलै ही,
मेड़ तजी कुल-गामकी ।
नारायन बौरी भइ डोलै,
रही न काहू कामकी ॥ ३ ॥

(९१)

मोहन बसि गयो मेरे मनमें ।
लोक-लाज कुल-कानि छूटि गई,
याकी नेह-लगनमें ॥ १ ॥
जित देखों तितही वह दीखै,
घर-बाहर, आँगनमें ।
अंग-अंग प्रति रोम-रोममें,
छाइ रह्यो तन-मनमें ॥ २ ॥
कुंडल-झलक कपोलन सोहै,
बाजूबंद भुजनमें ।
कंकन कलित ललित बनमाला,
नूपुर-धुनि चरननमें ॥ ३ ॥

चपल नैन, भ्रकुटी बर बाँकी,
ठाढ़ौ सघन लतनमें ।
नारायन बिन मोल बिकी हौं,
याकी नैंक हसनमें ॥ ४ ॥

(९२)

मनमोहन जाकी दृष्टि परत,
ताकी गति होत है और और ।
न सुहात भवन, तन असन बसन,
बनहीकों धावत दौर दौर ॥ १ ॥
नहिं धरत धीर, हिय वरत पीर,
ब्याकुल है भटकत ठौर ठौर ।
कब अँसुवन भर नारायन मन,
झाँकत डोलत पौर पौर ॥ २ ॥

(९३) खमाच

प्रीतम, तू मोहिं प्रानते प्यारौ ।
जो तोहि देखि हियौ सुख पावत,
सो बड़ भागनवारौ ॥ १ ॥

तू जीवनधन सरबस तू ही,
तुही दृगनकौ तारौ ।
जो तोकों पलभर न निहारूँ,
दीखत जग अँधियारौ ॥ २ ॥
मोद बढ़ावनके कारन हम,
मानिनि रूपहिं धारौ ।
नारायन हम दोउ एक हैं,
फूल सुगंध न न्यारौ ॥ ३ ॥

(९४) विहाग

करु मन, नंदनँदनको ध्यान ।
यहि अवसर तोहिं फिर न मिलैगो,
मेरौ कह्यौ अब मान ॥ १ ॥
घूँघरवारी अलकैं मुखपै,
कुंडल झलकत कान ।
नारायन अलसाने नैना,
झूमत रूपनिधान ॥ २ ॥

(९५) झँझोटी

स्याम दृगनकी चोट बुरी री ।

ज्यों ज्यों नाम लेति तू वाकौ,

मो घायलपै नौन पुरी री ॥ १ ॥

ना जानौं अब सुध-बुध मेरी,

कौन बिपिनमें जाय दुरी री ।

नारायन नहिं छूटत सजनी,

जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥ २ ॥

(९६) कान्हरा

नंदनँदनके ऐसे नैन ।

अति छबि भरे नागके छौना,

डरति डसैं करि सैन ॥ १ ॥

इनसम साबर मंत्र न होई,

जादू, जंत्र, तंत्र नहिं कोई ।

एक दृष्टिमें मन हरि लेवैं,

करि देवैं बेचैन ॥ २ ॥

चितवनमें घायल करि डारैं,

इनपै कोटि बान लै वारैं ।

अति पैने, तिरछे हिय कसकैं,

स्वास न देवैं लैन ॥ ३ ॥

चंचल चपल मनोहर कारे,

खंजन-मान-लजावन हारे ।

नारायन सुन्दर, मतवारे,

अनियारे, दुख-दैन ॥ ४ ॥

(९७) काफी

या साँवरेसों मैं प्रीति लगाई ।

कुल-कलंकतें नाहिं डरौंगी,

अब तौ करौं अपनी मनभाई ॥ १ ॥

बीच बजार पुकार कहौं मैं,

चाहै करौ तुम कोटि बुराई ।

लाज मजाद मिली औरनकों,

मृदु मुसकनि मेरे बट आई ॥ २ ॥

बिनु देखे मनमोहनकौ मुख,

मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई।

नारायन तिनकों सब फीकौ,

जिन चाखी यह रूप-मिठाई ॥ ३ ॥

(९८)

बेदरदी, तोहि दरद न आवै।

चितवनमें, चित बस करि मेरौ,

अब काहेकों आँख चुरावै ॥ १ ॥

कबसों परी द्वारपै तेरे,

बिन देखे जियरा घबरावै।

नारायन महबूब साँवरे,

घायल करि फिर गैल बतावै ॥ २ ॥

(९९) नट

देख सखी नव छैल छबीलौ,

प्रातसमय इततें को आवै ।

कमलसमान बड़े दृग जाके,

स्याम सलौनो मृदु मुसकावै ॥ १ ॥

जाकी सुन्दरता जग बरनत,

मुख-सोभा लखि चंद लजावै ।

नारायन यह किधौं वही है,

जो जसुमतिकौ कुँवर कहावै ॥ २ ॥

(१००) ईमन

मोपै कैसी यह मोहिनी डारी ।

चितचोर छैल गिरिधारी ॥

ग्रहकारजमें जी न लगत है,

खानपान लगै खारी ।

निपट उदास रहत हौं जबते,

सूरत देखि तिहारी ॥ १ ॥

संगकी सखी देति मोहिं धीरज,
बचन कहत हितकारी।
एक न लगत कही काहूकी,
कहति कहति सब हारी ॥ २ ॥
रही न लाज सकुच गुरुजनकी,
तन-मन सुरति बिसारी।
नारायन मोहिं समुझि बावरी,
हँसत सकल नर-नारी ॥ ३ ॥

(१०१) कवित्त

चाहै तू योग करि भृकुटीमध्य ध्यान धरि,
चाहै नाम-रूप मिथ्या जानिकै निहार लै।
निरगुन, निरभय, निराकार ज्योति ब्याप रही,
ऐसो तत्त्वग्यान निज मनमें तू धार लै ॥ १ ॥
नारायन अपनेको आप ही बखान करि,
'मोतें वह भिन्न नहीं' या बिधि पुकार लै।

जौलौं तोहि नन्दकौ कुमार नहिं दृष्टि पर्यौ,

तौलौं तू भलै बैठि ब्रह्मकौ बिचार लै ॥ २ ॥

(१०२) बिहाग

नयनों रे, चित-चोर बतावौ ।

तुमहीं रहत भवन रखवारे,

बाँके बीर कहावौ ॥ १ ॥

तुम्हरे बीच गयौ मन मेरौ,

चाहै सौंहैं खावौ ।

अब क्यों रोवत हो दइमारे,

कहुँ तौ थाह लगावौ ॥ २ ॥

घरके भेदी बैठि द्वार पै,

दिनमें घर लुटवावौ ।

नारायन मोहि बस्तु न चहिये,

लेनेहार दिखावौ ॥ ३ ॥

(१०३) लावनी

रूपरसिक, मोहन, मनोज-मन-
हरन, सकल-गुन-गरबीले।
छैल-छबीले चपललोचन
चकोर चित चटकीले ॥टेक॥

रतनजटित सिर मुकुट लटक रहि
सिमट स्याम लट घुँघुरारी।
बाल बिहारी कन्हैयालाल,
चतुर, तेरी बलिहारी ॥
लोलक मोती कान कपोलन
झलक बनी निरमल प्यारी।
जोति उज्यारी, हमैं हरबार
दरस दै गिरिधारी ॥
बिज्जुछटा-सी दंतछटा मुख
देखि सरदससि सरमीले।

छैल-छबीले, चपललोचन
चकोर चित चटकीले ॥ १ ॥
मंद हँसन, मृदु बचन तोतले
बय किसोर भोली-भाली ।
करत चोचले, अमोलक अधर
पीक रच रही लाली ॥
फूल गुलाब चिबुक सुंदरता,
रुचिर कंठछबि बनमाली ।
कर सरोजमें, बुंद मेंहँदी
अति अमंद है प्रतिपाली ॥
फूलछरी-सी नरम कमर कर-
धनीसब्द हैं तुरसीले ।
छैल-छबीले, चपललोचन
चकोर चित चटकीले ॥ २ ॥
झँगुली झीन जरीपट कछनी,
स्यामल गात सुहात भले ।

चाल निराली, चरन कोमल-
पंकजके पात भले ॥
पग नूपुरझनकार परम उत्तम
जसुमतिके तात भले ।
संग सखनके, जमुनतट
गो-बछरान चरात भले ॥
ब्रज-जुवतिनकौ प्रेम निरखि कर
घर-घर माखन गटकीले ।
छैल-छबीले, चपललोचन
चकोर चित चटकीले ॥ २ ॥
गावैं बाग-बिलास चरित हरि
सरद-रैन रस-रास करैं ।
मुनिजन मोहैं, कृष्ण, कंसादिक
खल-दल नास करैं ॥
गिरिधारी महराज सदा श्री-
ब्रजबृन्दाबन बास करैं ।

हरिचरित्रकों स्रवन सुन सुन
करि अति अभिलाष करैं ॥
हाथ जोरि करि करै बीनती
'नारायन' दिल दरदीले ।
छैल-छबीले, चपललोचन
चकोर चित चटकीले ॥ ४ ॥

(१०४) कालिंगड़ा

मूरख, छाँड़ि बृथा अभिमान ।
औसर बीति चल्यो है तेरौ, दो दिनकौ मेहमान ॥
भूप अनेक भये पृथिवीपर, रूप तेज बलवान ।
कौन बच्यौ या काल ब्यालतें मिटि गये नाम-निसान
धवल धाम, धन, गज, रथ, सेना, नारी चंद्र समान ।
अंत-समै सबहीकों तजिकै, जाय बसे समसान ॥
तजि सतसंग भ्रमत बिषयनमें, जा बिधि मरकट स्वान
छिन भरि बैठि न सुमिरन कीन्हों, जासों होय कल्यान
रे मन मूढ़, अनत जनि भटकै, मेरौ कह्यौ अब मान ।
नारायन ब्रजराज-कुँवरसों, बेगहि करि पहिचान ॥

(१०५)

टेर सुनों ब्रजराज-दुलारे ।

दीन मलीन हीन सब गुनते,
आय पर्‍यो हौं द्वार तिहारे ॥ टेर ॥
काम क्रोध अरु कपट मोह मद,
सो जाने निज प्रीतम प्यारे ।
भ्रमत रह्यों सँग इन बिषयनके,
तुव पदकमल न मैं उर धारे ॥ १ ॥
कौन कुकर्म किये नहिं मैंने,
जो गये भूल सो लिये उधारे ।
ऐसी खेप भरी रचि पचिकैं,
चकित भये लखिकै बनिजारे ॥ २ ॥
अब तौ एकबार कहौ हँसिके,
आजहिते तुम भये हमारे ।
याहि कृपाते नारायनकी
बेगि लगैगी नाव किनारे ॥ ३ ॥

ललितकिशोरी

(१०६) झँझोटी

मन, पछितैहौ भजन बिनु कीने ।
धन-दौलत कछु काम न आवै,
कमलनयन-गुन चित बिनु दीने ॥ १ ॥
देखनकौ यह जगत सँगाती,
तात-मात अपने सुख भीने ।
ललितकिसोरी दुंद मिटै ना,
आनँदकंद बिना हरि चीने ॥ २ ॥

(१०७) गौरी

मुसाफ़िर, रैन रही थोरी ।
जागु-जागु सुख-नींद त्यागि दै,
होत बस्तुकी चोरी ॥ १ ॥
मंज़िल दूरि भूरि भवसागर,
मान कूर मति मोरी ।

ललितकिसोरी हाकिमसों डरु,
करै जोर बरजोरी ॥ २ ॥

(१०८) पीलू

अब का सोवै सखि ! जाग जाग ।
रैन बिहात जात रस बिरियाँ,
चोलीके बँद ताग ताग ॥ १ ॥
जोबन उमँग सफल कर बौरी,
आन-कान सब त्याग त्याग ।
ललितकिसोरी लूट अनँदवा,
पीतमके गर लाग लाग ॥ २ ॥

(१०९)

लटक लटक मनमोहन आवनि ।
झूमि झूमि पग धरत भूमिपर
गति मातंग लजावनि ॥ १ ॥
गोखुर-रेनु अंग अँग मंडित,
उपमा दृग सकुचावनि ।

नव घनपै मनु झीन बदरिया,
सोभा रस बरसावनि ॥ २ ॥
बिगसति मुखलौं कानि दामिनी,
दसनावलि दमकावनि ।
बीच-बीच घनघोर माधुरी,
मधुरी बेनु बजावनि ॥ ३ ॥
मुकतमाल उर लसी छबीली,
मनु बग-पाँति सुहावनि ।
बिंदु गुलाल गुपाल-कपोलन,
इंद्रबधू छबि छावनि ॥ ४ ॥
रुनन झुनन किंकिनि-धुनि मानों
हंसनिकी चुहचावनि ।
बिलुलित अलक धूरिधूसर तन,
गमन लोटि भुव आवनि ॥ ५ ॥
जँघिया लसनि कनक-कछनी पै,
पटुका ऐंचि बँधावनि ।

पीतांबर फहरानि मुकुटछबि,
नटवर बेस बनावनि ॥ ६ ॥
हलनि बुलाक अधर तिरछौंही,
बीरी सुरँग रचावनि ।
ललितकिसोरी फूल-झरनिया
मधुर मधुर बतरावनि ॥ ७ ॥

(११०) ईमन

साधो, ऐसिइ आयु सिरानी ।
लगत न लाज लजावत संतन,
करतहिं दंभ छदंब बिहानी ॥ १ ॥
माला हाथ ललित तुलसी गर,
अँग अँग भगवत छाप सुहानी ।
बाहिर परम बिराग भजनरत,
अंतस मति पर-जुबति नसानी ॥ २ ॥
मुखसों ग्यान-ध्यान बरनत बहु,
कानन रति नित बिषय-कहानी ।

ललितकिसोरी कृपा करौ हरि,

हरि संताप सुहृद, सुखदानी ॥ ३ ॥

(१११) बिहाग

लाभ कहा कंचन तन पाये।

भजे न मृदुल कमल-दल-लोचन,

दुख-मोचन हरि हरखि न ध्याये ॥ १ ॥

तन-मन-धन अरपन ना कीन्हों,

प्रान प्रानपति गुननि न गाये।

जोबन, धन, कलधौत-धाम सब,

मिथ्या आयु गँवाय गँवाये ॥ २ ॥

गुरुजन गरब, बिमुख-रँग-राते,

डोलत सुख संपति बिसराये।

ललितकिसोरी मिटै ताप ना,

बिनु दृढ़ चिंतामनि उर लाये ॥ ३ ॥

(११२)

मोहनके अति नैन नुकीले ।
निकसे जात पार हियराके,
निरखत निपट गँसीले ॥ १ ॥
ना जानौं बेधन अनियनकी,
तीन लोकते न्यारी ।
ज्यों ज्यों छिदत मिठास हियेमें,
सुख लागत सुकुमारी ॥ २ ॥
जबसों जमुना कूल बिलोक्यो,
सब निसि नींद न आवै ।
उठत मरोर बंक चितवनियाँ,
उर उतपात मचावै ॥ ३ ॥
ललितकिसोरी आज मिलै,
जहवाँ कुलकानि बिचारौं ।
आग लगै यह लाज निगोड़ी,
दृग भरि स्याम निहारौं ॥ ४ ॥

(११३) खेमटा

रे निरमोही, छबि दरसाय जा ।

कान चातकी स्याम बिरह घन,

मुरली मधुर सुनाय जा ॥ १ ॥

ललितकिसोरी नैन चकोरन,

दुति मुखचंद दिखाय जा ।

भयौ चहत यह प्रान बटोही,

रूसे पथिक मनाय जा ॥ २ ॥

(११४) कवित्त

लजीले, सकुचीले, सरसीले, सुरमीलेसे,

कटीले औ कुटीले, चटकीले, मटकीले हैं ।

रूपके लुभीले, कजरीले, उनमीले, बर-

छीले, तिरछीलेसे, फँसीले औ गँसीले हैं ॥

ललितकिसोरी झमकीले, गरबीले, मानों,

अति ही रसीले, चमकीले औ रँगीले हैं ।

छबीले, छकीले, अरु नीलेसे नसीले आली,
नैना नँदलालके नचीले औ नुकीले हैं ॥

(११५) झूलना

दुनियाके परपंचोंमें हम
मजा नहीं कछु पाया जी ।
भाई-बंधु पिता-माता, पति,
सबसों चित अकुलाया जी ॥
छोड़-छाड़ घर, गाँव-नाँव कुल,
यही पंथ मनभाया जी ।
ललितकिसोरी आनँदघन सों
अब हठि नेह लगाया जी ॥ १ ॥
क्या करना है संतति-संपति,
मिथ्या सब जग माया है ।
शाल-दुशाले, हीरा-मोती-
में मन क्यों भरमाया है ॥

माता-पिता, पती-बंधू सब
गोरखधंध बनाया है।
ललितकिसोरी आनँदघन हरि
हिरदै कमल बसाया है ॥ २ ॥
बन-बन फिरना बिहतर हमको
रतनभवन नहिं भावै है।
लतातरे पड़ रहनेमें सुख
नाहिन सेज सुहावै है ॥
सोना कर धरि सीस भला अति
तकिया ख्याल न आवै है।
ललितकिसोरी नाम हरीका
जपि-जपि मन सचुपावै है ॥ ३ ॥
तजि दीनीं जब दुनियाँ-दौलत
फिर कोईके घर जाना क्या।
कंद-मूल-फल पाय रहैं अब
खट्टा-मीठा खाना क्या ॥

छिनमें साही बकसैं हमको
मोती-माल-खजाना क्या।
ललितकिसोरी रूप हमारा
जानै ना तहँ आना क्या ॥ ४ ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धि हमारी
मुट्ठीमें हरदम रहतीं।
नहीं जवाहिर, सोना-चाँदी,
त्रिभुवनकी संपति चहतीं ॥
भावैं ना दुनियाकी बातैं
दिलवरकी चरचा सहती।
ललितकिसोरी पार लगावै
मायाकी सरिता बहती ॥ ५ ॥
गौर-स्याम बदनारबिंदपर
जिसको बीर मचलते देखा।
नैन-बान, मुसक्यान संग फँस
फिर नहिं नेक सँभलते देखा॥

ललितकिसोरी जुगुल इश्कमें
बहुतोंका घर घलते देखा ।
डूबा प्रेमसिंधुका कोई
हमने नहीं उछलते देखा ॥ ६ ॥

देखौ री, यह नंदका छोरा
बरछी मारे जाता है ।
बरछी-सी तिरछी चितवनकी
पैनी छुरी चलाता है ॥
हमको घायल देख बेदरदी
मंद-मंद मुसकाता है ।
ललितकिसोरी जख़म जिगरपर
नौनपुरी बुरकाता है ॥ ७ ॥

(११६) सारंग

मुरकि मुरकि चितवनि चित चोरै ।
ठुमकि चलन हेरी दै बोलनि,
पुलकनि नंदकिसोरै ॥ १ ॥

सहरावनि गैयान चौंकनी,
थपकन कर बनमाली।
गुहरावनि लै नाम सबनकौ,
धौरी धूमर आली ॥ २ ॥
चुचकारनि चट झपटि बिचुकनी,
हूँ हूँ रहौ रँगीली।
नियरावनि चोरवनि मगहीमें,
झुकि बछियान छबीली ॥ ३ ॥
फिरकैयाँ लै निरत अलापन,
बिच बिच तान रसीली।
चितवनि ठिठुकि उढकि गैयासों,
सीटी भरनि रसीली ॥ ४ ॥
चाँपन अधर सैन दै चंचल,
नैनन मेलि कटारी।
जोरन कर हा हा करि मोहन,
मुसकन ऐंड़ि बिहारी ॥ ५ ॥
बाँह उठाय उचकि पग टेरनि,
इतै कितै हौ स्यामा।

निकसी नई आज तैं बनरिहु,
मोरे ढिग अभिरामा ॥ ६ ॥
हरुवे खोर साँकरी जुवतिन,
कहत गुलाम तिहारौ ।
मिलियौ रैन मालती कुंजै,
तहँ पिक अरुन निहारौ ॥ ७ ॥
काहू झटक चीर लकुटीतें,
काहू पग दबावै ।
काहू अंग परसि काहू तन,
नैनन कोर नचावै ॥ ८ ॥
उरझत पट नूपुरसों पाछे
झुकि झुकि कै सुरझावै ।
ललितकिसोरी ललित लाड़िली,
दृग संकेत बतावै ॥ ९ ॥

(११७) खमाच

नैन चकोर, मुखचंदहूकों बारि डारौं,
बारि डारौं चित्तहिं मनमोहन चितचोरपै ।

प्रानहूकों बारि डारौं हँसन दसन लाल,
हेरन कुटिलता औ लोचनकी कोरपै ॥१॥
बारि डारौं मनहिं सुअंग अँग स्यामा-स्याम,
महल मिलाप रस रासकी झकोरपै ।
अतिहि सुघर बर सोहत त्रिभंगीलाल,
सरबस बारौं वा ग्रीवाकी मरोरपै ॥२॥

(११८)

अब तौ तेरिय हाथ बिकानी ।
मृदु बोलन मुसक्यान माधुरी,
तन मन नैन समानी ॥ १ ॥
लोक-लाज, कुल-कानि तजी सब,
जामें तुव रुचि चीनी ।
धरम-करम ब्रत-नेम सबै सो,
तोई रँग-रस भीनी ॥ २ ॥
तुव कारन यह भेष बनायौ,
प्रगट उघरि करि नाची ।

नाउँ कुनाउँ धरौ किन कोऊ,
हौं नाहिंन मति काँची ॥ ३ ॥
होनी होय सो होय भले ही,
तन-मन लगन लगी है ।
ललितकिसोरी लाल तिहारे,
मति अनुराग पगी है ॥ ४ ॥

(११९) अल्हैया

मैं तुव पदतर रेनु रसीली ।
तेरी सरवरि कौन करि सकै,
प्रेममई मूरति गरबीली ॥ १ ॥
कोटिहु प्रान वारनें करिकै,
उरिन न तोसों प्रीति रँगीली ।
अपनी प्रेम-छटा करुना करि,
दीजै दान दयाल छबीली ॥ २ ॥
का मुख करौं बड़ाई राई,
ललितकिसोरी केलि हठीली ।
प्रीति दसांस सतांस तिहारी,
मोमें नाहिन नेह नसीली ॥ ३ ॥

(१२०) प्रभाती

कमलमुख खोलौ आजु पियारे ।
बिगसित कमल कुमोदिनि मुकलित,
अलिगन मत्त गुँजारे ॥ १ ॥
प्राची दिसि रबि थार आरती
लिये ठनी निवछारे ।
ललितकिसोरी सुनि यह बानी
कुरकुट बिसद पुकारे ।
रजनी राज बिदा माँगै बलि,
निरखौ पलक उघारे ॥ २ ॥

(१२१) अलहैया

अब कुलकानि तजेही बनैगी ।
पलक-ओट सत कोटि कलप सम,
बिछुरत हिये कटारि हनैगी ॥ १ ॥
ललितकिसोरी अंत एक दिन,
तजिबेई जब तान तनैगी ।
फिर का सोच देहु तिल अंजुलि,
लेहु अंक रसकेलि छनैगी ॥ २ ॥

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

भजन-संग्रह

दूसरा भाग (दूसरा खण्ड)

दादूदयाल

(१२२) गौरी

मेरे मन भैया राम कहौ रे ॥ टेक ॥

रामनाम मोहिं सहजि सुनावै ।
उनहिं चरण मन कीन रहौ रे ॥ १ ॥

रामनाम ले संत सुहावै ।
कोई कहै सब सीस सहौ रे ॥ २ ॥

वाहीसों मन जोरे राखौ ।
नीकै रासि लिये निबहौ रे ॥ ३ ॥

कहत-सुनत तेरौ कछू न जावै ।
पाप निछेदन सोई लहौ रे ॥ ४ ॥

दादू रे जन हरि-गुण गावो ।
कालहि जालहि फेरि दहौ रे ॥ ५ ॥

(१२३)

बिरहणिकौं सिंगार न भावै ।
है कोइ ऐसा राम मिलावै ॥टेक॥

बिसरे अंजन-मंजन, चीरा ।
बिरह-बिथा यह ब्यापै पीरा ॥ १ ॥

नौसत थाके सकल सिंगारा ।
है कोइ पीड़ मिटावनहारा ॥ २ ॥

देह-गेह नहिं सुद्धि सरीरा ।
निसदिन चितवत चातक नीरा ॥ ३ ॥

दादू ताहि न भावत आना ।
राम बिना भई मृतक समाना ॥ ४ ॥

(१२४)

तौलगि जिनि मारै तूँ मोहिं ।
जौलगि मैं देखौं नहिं तोहिं ॥ टेक ॥

इबके बिछुरे मिलन कैसे होइ ।

इहि बिधि बहुरि न चीन्हे कोइ ॥१॥

दीनदयाल दया करि जोइ ।

सब सुख-आनँद तुम सूँ होइ ॥२॥

जनम-जनमके बंधन खोइ ।

देखण दादू अहि निशि रोइ ॥३॥

(१२५)

संग न छाँड़ौ मेरा पावन पीव ।

मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥ टेक ॥

संगि तुम्हारे सब सुख होइ ।

चरण-कँवल मुख देखौं तोहि ॥१॥

अनेक जतन करि पाया सोइ ।

देखौं नैनौं तौ सुख होइ ॥२॥

सरण तुम्हारी अंतरि बास ।

चरण-कँवल तहँ देहु निवास ॥३॥

अब दादू मन अनत न जाइ ।
अंतर बेधि रह्यौ लौ लाइ ॥४॥

(१२६)

ऐसा राम हमारे आवै ।
वार पार कोइ अंत न पावै ॥ टेक ॥
हलका भारी कह्या न जाइ ।
मोल-माप नहिं रह्या समाइ ॥ १ ॥
कीमत-लेखा नहिं परिमाण ।
सब पचि हारे साध सुजाण ॥ २ ॥
आगौ पीछौ परिमित नाहीं ।
केते पारिष आवहिं जाहीं ॥ ३ ॥
आदि-अंत-मधि लखै न कोइ ।
दादू देखे अचरज होइ ॥ ४ ॥

(१२७)

राम रस मीठा रे, कोइ पीवै साधु सुजाण ।
सदा रस पीवै प्रेमसूँ, सो अबिनासी प्राण ॥ टेक ॥

इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा-बिसुन-महेस ।
सुर-नर साधू-संत जन, सो रस पीवै सेस ॥१॥
सिध-साधक जोगी-जती, सती सबै सुखदेव ।
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव ॥२॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास ।
पिवत कबीरा ना थक्या, अजहूँ प्रेम पियास ॥३॥
यह रस मीठा जिन पिया, सो रसही माहिं समाइ ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ ॥४॥

(१२८)

सोई सुहागनि साँच सिँगार ।
तन-मन लाइ भजै भरतार ॥टेक॥
भाव-भगत प्रेम-लौ लावै ।
नारी सोई सुख पावै ॥ १ ॥
सहज सँतोष सील जब आया ।
तब नारी नाह अमोलिक पाया ॥ २ ॥

तन मन जोबन सौंपि सब दीन्हा ।
तब कंत रिझाइ आप बस कीन्हा।। ३ ।।
दादू बहुरि बियोग न होई ।
पिवसूँ प्रीति सुहागनि सोई ।। ४ ।।

(१२९)

तब हम एक भये रे भाई ।
मोहन मिल साँची मति आई ।। टेक ।।
पारस परस भये सुखदाई ।
तब दुनिया दुरमत दूरि गमाई ।। १ ।।
मलयागिरी मरम मिलि पाया ।
तब बंस-बरण-कुल भरम गँवाया ।। २ ।।
हरि जल नीर निकट जब आया ।
तब बूँद बूँद मिल सहज समाया ।। ३ ।।
नाना भेद भरम सब भागा ।
तब दादू एक रंगै रँग लागा ।। ४ ।।

(१३०)

इत है नीर नहावन जोग।
अनतहिं भरम भूला रे लोग॥टेक॥
तिहि तटि न्हाये निर्मल होइ।
बस्तु अगोचर लखै रे सोइ॥ १ ॥
सुघट घाट अरु तिरिवौ तीर।
बैठे तहाँ जगत-गुर पीर॥ २ ॥
दादू न जाणै तिनका भेव।
आप लखावै अंतर देव॥ ३ ॥

(१३१) माली गौड़ी

मेरा मेरा छोड़ गँवारा,
सिरपर तेरे सिरजनहारा।
अपने जीव बिचारत नाहीं,
क्या ले गइला बंस तुम्हारा॥टेक॥
तब मेरा कत करता नाहीं,
आवत है हंकारा।

काल-चक्रसूँ खरी परी रे,
बिसर गया घर-बारा ॥ १ ॥
जाइ तहाँ का संयम कीजै,
बिकट पंथ गिरधारा ।
दादू रे तन अपना नाहीं,
तौ कैसे भयो सँसारा ॥ २ ॥

(१३२) कल्यान

जगसूँ कहा हमारा । जब देख्या नूर तुम्हारा ॥टेक॥
परम तेज घर मेरा । सुख-सागर माहिं बसेरा ॥ १ ॥
झिलिमिलि अति आनंदा । पाया परमानंदा ॥ २ ॥
जोति अपार अनंता । खेलैं फाग बसंता ॥ ३ ॥
आदि अंत असथाना । दादू सो पहिचाना ॥ ४ ॥

(१३३) कान्हड़ा

आव पियारे मीत हमारे ।
निस-दिन देखूँ पाँव तुम्हारे ॥टेक॥

सेज हमारी पीव सँवारी ।
दासि तुम्हारी सो धन वारी ॥ १ ॥
जे तुझ पाऊँ अंग लगाऊँ ।
क्यूँ समझाऊँ बारण जाऊँ ॥ २ ॥
पंथ निहारूँ बाट सँवारूँ ।
दादू तारूँ तन मन वारूँ ॥ ३ ॥

(१३४) केदारा

अरे मेरा अमर उपावणहार रे ।
खालिक आशिक तेरा ॥टेक॥
तुमसूँ राता तुमसूँ माता ।
तुमसूँ लागा रंग रे खालिक ॥ १ ॥
तुमसूँ खेला तुमसूँ मेला ।
तुमसूँ प्रेम-सनेह रे खालिक ॥ २ ॥
तुमसूँ लैणा तुमसूँ दैणा ।
तुमहींसूँ रत होइ रे खालिक ॥ ३ ॥

खालिक मेरा आसिक तेरा ।
दादू अनत न जाइ रे खालिक॥ ४ ॥

(१३५)

बटाऊ रे चलना आज कि काल ।
समझ न देखै कहा सुख सोवै,
रे मन राम सँभाल ॥टेक॥
जैसैं तरवर बिरख बसेरा,
पंखी बैठे आइ ।
ऐसैं यह सब हाट पसारा,
आप आप कूँ जाइ ॥ १ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती,
जिनि खोवै मन मूल ।
यह संसार देखि मत भूलै,
सबही सेंबल फूल ॥ २ ॥
तन नहिं तेरा, धन नहिं तेरा,
कहा रह्यो इहिं लागि ।

दादू हरि बिन क्यूँ सुख सोवै,
काहे न देखै जागि ॥ ३ ॥

(१३६)

कोइ जानै रे मरम माधइया केरौ ।
कैसें रहै करै का सजनी प्राण मेरौ ॥टेक॥
कौण बिनोद करत री सजनी,
कौणनि संग बसेरौ ।
संत-साध गति आये उनकै,
करत जु प्रेम घनेरौ ॥ १ ॥
कहाँ निवास बास कहँ,
सजनी गवन तेरौ ।
घट-घट माहैं रहै निरंतर,
ये दादू नेरौ ॥ २ ॥

(१३७) मारू

क्यों बिसरै मेरा पीव पियारा ।
जीवकी जीवन प्राण हमारा ॥टेक॥

क्यौंकर जीवै मीन जल बिछुरें,
तुम बिन प्राण सनेही।
चिंतामणि जब करतैं छूटै,
तब दुख पावै देही ॥ १ ॥
माता बालक दूध न देवै,
सो कैसैं करि पीवै।
निरधनका धन अनत भुलाना,
सो कैसे करि जीवै ॥ २ ॥
बरखहु राम सदा सुख अमरित,
नीझर निरमल धारा।
प्रेम पियाला भर भर दीजै,
दादू दास तुम्हारा ॥ ३ ॥

(१३८)

कबहूँ ऐसा बिरह उपावै रे।
पिव बिन देखैं जीव जावै रे ॥टेक॥

त्रिपत हमारी सुनौ सहेली ।
पिव बिन चैन न आवै रे ॥
ज्यौं जल मीन भीन तन तळफै ।
पिव बिन बज्र बिहावै रे ॥ १ ॥
ऐसी प्रीति प्रेमकी लागै ।
ज्यों पंखी पीव सुनावै रे ॥
त्यौं मन मेरा रहै निसबासुर ।
कोइ पीवकूँ आणि मिलावै रे ॥ २ ॥
तौ मन मेरा धीरज धरई ।
कोइ आगम आणि जणावै रे ॥
तौ सुख जीव दादूका पावै ।
पल पिवजी आप दिखावै रे ॥ ३ ॥

(१३९)

जागि रे सब रैण बिहाणी ।
जाइ जनम अँजुलीको पाणी ॥टेक॥

घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै ।
जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥१॥
सूरज-चंद कहैं समझाइ ।
दिन-दिन आव घटती जाइ ॥ २ ॥
सरवर-पाणी तरवर-छाया ।
निसदिन काल गरासै काया ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना ।
दादू आतम राम न जाना ॥ ४ ॥

(१४०) रामकली

अहो नर नीका है हरिनाम ।
दूजा नहीं नाँउ बिन नीका, कहिले केवल राम ।टेक।
निरमल सदा एक अबिनासी, अजर अकल रस ऐसा
दृढ़ गहि राखि मूल मन माहीं, निरख देखि निज कैसा
यह रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै ।
राता रहै प्रेमसूँ माता, ऐसैं जुगि जुगि जीवै ॥ २ ॥

दूजा नहीं और को ऐसा, गुर अंजन करि सूझै।
दादू मोटे भाग हमारे, दास बमेकी बूझै ॥ ३ ॥

(१४१)

पंडित राम मिलै सो कीजै।
पढ़ि-पढ़ि बेद पुराण बखाने,
सोई तत कहि दीजै ॥टेक॥
आतम रोगी विषम बियाधी,
सोइ करि औषध सारा।
परसत प्राणी होइ परम सुख,
छूटै सब संसारा ॥ १ ॥
ये गुण इंद्री अगिनि अपारा,
तासन जलै सरीरा।
तन-मन सीतल होइ सदा सुख,
सो जल नावौ नीरा ॥ २ ॥
सोई मारग हमहिं बतावौ,
जिहिं पँथ पहुँचैं पारा।

भूल न परै उलट नहिं आवै,
सो कुछ करहु बिचारा ॥ ३ ॥
गुर उपदेस देहु कर दीपक,
तिमर मिटै सब सूझै ।
दादू सोई पंडित ग्याता,
राम-मिलनकी बूझै ॥ ४ ॥

(१४२) आसावरी

तूँहीं मेरे रसना तूँहीं मेरे बैना ।
तूँहीं मेरे स्रवना तूँहीं मेरे नैना ॥टेक॥
तूँहीं मेरे आतम कँवल मँझारी ।
तूँहीं मेरे मनसा तुम्ह परिवारी॥१॥
तूँहीं मेरे मनहीं, तूँहीं मेरे साँसा ।
तूँहीं मेरे सुरतैं प्राण निवासा ॥२॥
तूँहीं मेरे नख-सिख सकल सरीरा ।
तूँहीं मेरे जिय रे ज्यूँ जल नीरा ॥३॥
तुम्ह बिन मेरे और कोइ नाहीं ।
तूँहीं मेरी जीवनि दादू माँहीं ॥४॥

(१४३)

बाबा नाहीं दूजा कोई ।
एक अनेकन नाँव तुम्हारे, मोपैं और न होई ॥टेक॥
अलख इलाही एक तूँ, तूँहीं राम रहीम ।
तूँहीं मालिक मोहना, कैसो नाँउ करीम ॥ १ ॥
साँई सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक ।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ॥ २ ॥
रमिता राजिक एक तूँ, तूँ सारँग सुबहान ।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुल्तान ॥ ३ ॥
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी गुसाईं एक ।
अजब अनूपम आप है, दादू नाँव अनेक ॥ ४ ॥

(१४४) देवगंधार

मन मूरिखा तैं यौंहीं जनम गँवायौ ।
साँईकेरी सेवा न कीन्हीं,
इहि कलि काहेकूँ आयौ ॥टेक॥

जिन बातन तेरौ छूटिक नाहीं,
सोई मन तेरो भायौ ।
कामी ह्वै विषयासँग लाग्यो,
रोम रोम लपटायौ ॥ १ ॥
कुछ इक चेति बिचारी देखौ,
कहा पाप जिय लायौ ।
दादूदास भजन करि लीजै,
सुपिने जग डहकायौ ॥ २ ॥

(१४५) **परज**

नूर रह्या भरपूर, अमीरस पीजिये ।
रस मोहैं रस होइ, लाहा लीजिये ॥टेक॥
परगट तेज अनंत, पार नहिं पाइये ।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ, तहाँ मन लाइये ॥ १ ॥
सहजैं सदा प्रकास, ज्योति जल पूरिया ।
तहाँ रहै निज दास, सेवग सूरिया ॥ २ ॥

सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है ।
हंस रहैं ता माहिं, दादू दास है ॥ ३ ॥

(१४६) टोड़ी

तूँ साँचा साहिब मेरा ।
करम करीम कृपाल निहारौ, मैं जन बंदा तेरा ॥टेक॥
तुम दीवान सबहिनकी जानौं, दीनानाथ दयाला ।
दिखाइ दीदार मौज बंदेकूँ, काइम करौ निहाला ॥
मालिक सबै मुल्किके साँई, समरथ सिरजनहारा ।
खैर खुदाइ खलकमें खेलत, दे दीदार तुम्हारा ॥
मैं सिकस्ता दरगह तेरी, हरि हजूर तूँ कहिये ।
दादू द्वारै दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये ॥

(१४७) बिलावल

सोई साध-सिरोमणी, गोविँद गुण गावै ।
राम भजै बिषिया तजै, आपा न जनावै ॥टेक॥
मिथ्या मुख बोलै नहीं, पर-निंदा नाहीं ।
औगुण छोड़ै गुण गहै, मन हरि-पदमाहीं ॥ १ ॥

निरवैरी सब आतमा, पर आतम जानै ।
सुखदाई समता गहै, आपा नहिं आनै ॥ २ ॥
आपा पर अंतर नहीं, निरमल निज सारा ।
सतबादी साचा कहै, लैलीन बिचारा ॥ ३ ॥
निरभै भज न्यारा रहै, काहू लिपत न होई ।
दादू सब संसारमें, ऐसा जन कोई ॥ ४ ॥

(१४८) गौरी

हिंदू तुरक न जाणौं दोइ ।
साँई सबका सोई है रे,
और न दूजा देखौं कोइ ॥टेक॥
कीट-पतंग सबै जोनिनमें,
जल-थल संगि समाना सोइ ।
पीर पैगंबर देवा-दानव,
मीर-मलिक मुनि-जनकौं मोहि ॥ १ ॥

करता है रे सोई चीन्हौं,

जिन वै क्रोध करै रे कोइ ।

जैसैं आरसी मंजन कीजै,

राम-रहीम देही तन धोइ ॥ २ ॥

साँईकेरी सेवा कीजै,

पायौ धन काहेकौं खोइ ।

दादू रे जन हरि भज लीजै,

जनम जनम जे सुरजन होइ ॥ ३ ॥

रैदास

(१४९)

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥टेक॥
जबलग है या तनकी आसा,
तबलग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तनकी,
तब को गावनहारा ॥ १ ॥
जबलग नदी न समुद समावै,
तबलग बढ़ै हँकारा ।
जब मन मिल्यौ राम-सागरसों,
तब यह मिटी पुकारा ॥ २ ॥
जबलग भगति मुकतिकी आसा,
परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ-जहँ आस धरत है यह मन,
तहँ-तहँ कछू न पावै ॥ ३ ॥

छाडै आस निरास परमपद,
तब सुख सति कर होई।
कह रैदास जासों और करत है,
परम तत्त्व अब सोई ॥ ४ ॥

(१५०)

ऐसो कछु अनुभव कहत न आवै।
साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥ टेक ॥
सबमें हरि है हरिमें सब है,
हरि अपनो जिन जाना।
साखी नहीं और कोइ दूसर,
जाननहार सयाना ॥ १ ॥
बाजीगरसों राचि रहा,
बाजीका मरम न जाना।
बाजी झूठ साँच बाजीगर,
जाना मन पतियाना ॥ २ ॥

मन थिर होइ तो कोइ न सूझै,
जानै जाननहारा ।
कह रैदास बिमल बिबेक सुख,
सहज सरूप सँभारा ॥ ३ ॥

(१५१)

जब रामनाम कहि गावैगा,
तब भेद अभेद समावैगा ॥टेक॥
जे सुख है या रसके परसे,
सो सुख का कहि गावैगा ॥ १ ॥
गुरु परसाद भई अनुभौ मति,
बिष अमरित सम धावैगा ॥ २ ॥
कह रैदास मेटि आपा-पर,
तब वा ठौरहि पावैगा ॥ ३ ॥

(१५२)

रामा हो जग जीवन मोरा ।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ॥टेक॥

संकट सोच पोच दिनराती ।

करम कठिन मोरि जाति कुजाती ॥ १ ॥

हरहु बिपति भावै करहु सो भाव ।

चरण न छाड़ौं जाव सो जाव ॥ २ ॥

कह रैदास कछु देहु अलंबन ।

बेगि मिलौ जनि करो बिलंबन ॥ ३ ॥

(१५३)

अब हम खूब वतन घर पाया ।

ऊँचा खेड़ा सदा मेरे भाया ॥टेक॥

बेगमपूर सहरका नाम

फिकर अँदेश नहीं तेहि ग्राम ॥ १ ॥

नहिं जहाँ साँसत लानत मार ।

हैफ न खता न तरस जवाल ॥ २ ॥

आव न जान रहम औजूद ।

जहाँ गनी आप बसै माबूद ॥ ३ ॥

जोई सैलि करै सोई भावै।

मरहम महलमें को अटकावै ॥ ४ ॥

कह रैदास खलास चमारा।

जो उस सहर सो मीत हमारा ॥ ५ ॥

(१५४)

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ।

फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ॥टेक॥

थनतर दूध जो बछरू जुठारी।

पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥ १ ॥

मलयागिर बेधियो भुअंगा।

बिष अमृत दोउ एकै संगा ॥ २ ॥

मन ही पूजा मन ही धूप।

मन ही सेऊँ सहज सरूप ॥ ३ ॥

पूजा अरचा न जानूँ तेरी।

कह रैदास कवन गति मेरी ॥ ४ ॥

(१५५)

देहु कलाली एक पियाला।
ऐसा अवधू है मतवाला ॥टेक॥
हे रे कलाली तैं क्या किया।
सिरका-सा तैं प्याला दिया ॥ १ ॥
कहै कलाली प्याला देऊँ।
पीवनहारेका सिर लेऊँ ॥ २ ॥
चंद-सूर दोउ सनमुख होई।
पीवै प्याला मरै न कोई ॥ ३ ॥
सहज सुन्नमें भाठी सरवे।
पावै रैदास गुरुमुख दरवे ॥ ४ ॥

(१५६)

पार गया चाहै सब कोई।
रहि उर वार पार नहिं होई ॥टेक॥
पार कहै उर वारसे पारा।
बिन पद परचे भ्रमै गँवारा ॥ १ ॥

पार परम पद मंझ मुरारी ।
तामें आप रमै बनवारी ॥ २ ॥
पूरन ब्रह्म बसै सब ठाईं ।
कह रैदास मिलै सुख साईं ॥ ३ ॥

(१५७)

यह अंदेस सोच जिय मेरे ।
निसिबासर गुन गाऊँ तेरे ॥टेक॥
तुम चिंतत मेरी चिंतहु जाई ।
तुम चिंतामनि हौ इक नाईं ॥ १ ॥
भगत-हेत का का नहिं कीन्हा ।
हमरी बेर भये बलहीना ॥ २ ॥
कह रैदास दास अपराधी ।
जेहि तुम द्रवौ सो भगति न साधी ॥ ३ ॥

(१५८)

जो तुम तोरौ राम मैं नाहिं तोरौं ।
तुमसे तोरि कवनसे जोरौं ॥टेक ॥

तीरथ बरत न करौं अँदेसा ।

तुम्हरे चरन कमल क भरोसा ॥ १ ॥

जहँ जहँ जाओं तुम्हरी पूजा ।

तुम-सा देव और नहिं दूजा ॥ २ ॥

मैं अपनो मन हरिसों जोर्यों ।

हरिसों जोरि सबनसों तोर्यों ॥ ३ ॥

सबही पहर तुम्हारी आसा ।

मन क्रम बचन कहै रैदासा ॥ ४ ॥

(१५९)

सो कहा जानै पीर पराई ।

जाके दिलमें दरद न आई ॥टेक॥

दुखी दुहागिनि होइ पियहीना,

नेह निरति करि सेव न कीना ।

स्याम-प्रेमका पंथ दुहेला,

चलन अकेला कोइ संग न हेला ॥ १ ॥

सुखकी सार सुहागिनि जानै,

तन-मन देय अंतर नहिं आनै ।

आन सुनाय और नहिं भाषै,

राम रसायन रसना चाखै ॥ २ ॥

खालिक तौ दरमंद जगाया,

बहुत उमेद जवाब न पाया ।

कह रैदास कवन गति मेरी,

सेवा बंदगी न जानूँ तेरी ॥ ३ ॥

(१६०) गौड़

आज दिवस लेऊँ बलिहारा ।

मेरे घर आया रामका प्यारा ॥टेक॥

आँगन बँगला भवन भयो पावन ।

हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥ १ ॥

करूँ डंडवत चरन पखारूँ ।

तन-मन-धन उन ऊपरि वारूँ ॥ २ ॥

कथा कहैं अरु अरथ बिचारैं।

आप तरैं औरनको तारैं ॥ ३ ॥

कह रैदास मिलैं निज दासा।

जनम जनमकै काटैं पासा ॥ ४ ॥

(१६१)

कवन भगतिते रहै प्यारो पाहुनो रे

घर घर देखों मैं अजब अभावनो रे ॥टेक॥

मैला मैला कपड़ा केता एक धोऊँ।

आवै आवै नींदहि कहाँलों सोऊँ ॥ १ ॥

ज्यों ज्यों जोड़ै त्यों त्यों फाटै।

झूठै सबनि जरै उठि गयो हाटै ॥ २ ॥

कह रैदास परो जब लेख्यौ।

जोई जोई कियो रे सोई सोई देख्यौ ॥ ३ ॥

(१६२)

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ॥टेक॥

प्रभुजी, तुम चंदन, हम पानी ।

जाकी अँग अँग बास समानी ॥ १ ॥

प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा ।

जैसे चितवत चंद चकोरा ॥ २ ॥

प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।

जाकी जोति बरै दिन राती ॥ ३ ॥

प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।

जैसे सोनहि मिलत सुहागा ॥ ४ ॥

प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा ।

ऐसी भगति करै रैदासा ॥ ५ ॥

मलूकदास

(१६३)

हरि समान दाता कोउ नाहीं ।
सदा बिराजैं संतनमाहीं ॥ १ ॥
नाम बिसंभर, बिस्व जियावैं ।
साँझ बिहान रिजिक पहुँचावैं ॥ २ ॥
देइ अनेकन मुखपर ऐने ।
औगुन करै सो गुन करि मानैं ॥ ३ ॥
काहू भाँति अजार न देई ।
जाहीको अपना कर लेई ॥ ४ ॥
घरी घरी देता दीदार ।
जन अपनेका खिजमतगार ॥ ५ ॥
तीन लोक जाके औसाफ़ ।
जनका गुनह करै सब माफ़ ॥ ६ ॥
गरुवा ठाकुर है रघुराई ।
कहैं मलूक क्या करूँ बड़ाई ॥ ७ ॥

(१६४)

सदा सोहागिन नारि सो, जाके राम भतारा ।
मुख माँगे सुख देत हैं, जगजीवन प्यारा ॥ १ ॥
कबहुँ न चढ़ै रँडपुरा, जानै सब कोई ।
अजर अमर अबिनासिया, ताकौ नास न होई ॥ २ ॥
नर-देही दिन दोयकी, सुन गुरुजन मेरी ।
क्या ऐसोंका नेहरा, मुए बिपति घनेरी ॥ ३ ॥
ना उपजै ना बीनसै, संतन सुखदाई ।
कहैं मलूक यह जानिकै, मैं प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

(१६५)

अब तेरी सरन आयो राम ॥ १ ॥
जबै सुनियो साधके मुख, पतित-पावन नाम ॥ २ ॥
यही जान पुकार कीन्ही, अति सतायो काम ॥ ३ ॥
बिषयसेती भयो आजिज कह मलूक गुलाम ॥ ४ ॥

(१६६)

साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है ।
जहवाँ सुमिरन होय, धन्य सो ठाम है ॥ १ ॥
साँचा तेरा भगत, जो तुझको जानता ।
तीन लोकको राज, मनै नहिं आनता ॥ २ ॥
झूठा नाता छोड़ि, तुझै लव लाइया ।
सुमिरि तिहारो नाम, परम पद पाइया ॥ ३ ॥
जिन यह लाहा पायो, यह जग आय कै ।
उतरि गयो भवपार, तेरो गुन गाइ कै ॥ ४ ॥
तुही मातु, तुही पिता, तुही हित-बंधु है ।
कहत मलूका दास, बिना तुझ धुंध है ॥ ५ ॥

(१६७)

कौन मिलावै जोगिया हो,
जोगिया बिन रह्यो न जाय ॥टेक॥
मैं जो प्यासी पीवकी,
रटत फिरौं पिउ पीव ।

जो जोगिया नहिं मिलिहै हो,
तो तुरत निकासूँ जीव ॥ १ ॥
गुरुजी अहेरी मैं हिरनी,
गुरु मारैं प्रेमका बान ।
जेहि लागै सोई जानई हो,
और दरद नहिं जान ॥ २ ॥
कहैं मलूक सुनु जोगिनी रे,
तनहिंमें मनहिं समाय ।
तेरे प्रेमके कारने जोगी,
सहज मिला मोहिं आय ॥ ३ ॥

(१६८)

तेरा मैं दीदार-दिवाना ।
घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ,
सुन साहेब रहमाना ॥ १ ॥

हुआ अलमस्त ख़बर नहिं तनकी,
पीया प्रेम-पिआला ।
ठाढ़ होउँ तौ गिरि गिरि परता,
तेरे रँग मतवाला ॥ २ ॥
खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे,
ज्यों घरका बंदाजादा ।
नेकीकी कुलाह सिर दीये,
गले पैरहन साजा ॥ ३ ॥
तौजी और निमाज न जानूँ,
ना जानूँ धरि रोजा ।
बाँग जिकर तबहीसे बिसरी,
जबसे यह दिल खोजा ॥ ४ ॥
कह मलूक अब कजा न करिहौं,
दिलहीसों दिल लाया ।
मक्का हज्ज हियेमें देखा,
पूरा मुरसिद पाया ॥ ५ ॥

(१६९)

दरद-दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ।
एक अकीदा लै रहे, ऐसे मन-धीरा ॥ १ ॥
प्रेमी पियाला पीवते, बिसरे सब साथी ।
आठ पहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी ॥ २ ॥
उनकी नज़र न आवते, कोइ राजा रंक ।
बंधन तोड़े मोहके, फिरते निहसंक ॥ ३ ॥
साहेब मिल साहेब भये, कछु रही न तमाई ।
कहैं मलूक तिस घर गये, जहँ पवन न जाई ॥ ४ ॥

(१७०)

हमसे जनि लागै तू माया ।
थोरेसे फिर बहुत होयगी,
सुनि पैहैं रघुराया ॥ १ ॥
अपनेमें है साहेब हमारा,
अजहूँ चेतु दिवानी ।
काहू जनके बस परि जैहौ,
भरत मरहुगी पानी ॥ २ ॥

तर ह्वै चितै लाज करु जनकी,
डारु हाथकी फाँसी ।
जनतें तेरो जोर न लहिहै,
रच्छपाल अबिनासी ॥ ३ ॥
कहै मलूका चुप करु ठगनी,
औगुन राखु दुराई ।
जो जन उबरै राम नाम कहि,
तातें कछु न बसाई ॥ ४ ॥

(१७१)

नाम हमारा ख़ाक है, हम ख़ाकी बन्दे ।
ख़ाकहीं ते पैदा किये, अति ग़ाफ़िल गन्दे ॥ १ ॥
कबहुँ न करते बंदगी, दुनियामें भूले ।
आसमानको ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ॥ २ ॥
जोरू-लड़के खुस किये, साहेब बिसराया ।
राह नेकीकी छोड़िके, बुरा अमल कमाया ॥ ३ ॥
हरदम तिसको याद कर, जिन वजूद सँवारा ।
सबै ख़ाक दर ख़ाक है, कुछ समुझ गँवारा ॥ ४ ॥

हाथी घोड़े खाकके, खाक खानखानी ।
कहैं मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ॥ ५ ॥

(१७२)

ऐ अजीज ईमान तू, काहेको खोवै ।
हिय राखे दरगाहमें, तो प्यारा होवै ॥ १ ॥
यह दुनिया नाचीज़के, जो आसिक होवै ।
भूलै जात खोदायको, सिर धुन धुन रोवै ॥ २ ॥
इस दुनिया नाचीज़के, तालिब हैं कुत्ते ।
लज्ज़तमें मोहित हुए, दुख सहे बहुते ॥ ३ ॥
जबलगि अपने आपको, तहकीक न जानै ।
दास मलूका रब्बको, क्योंकर पहिचानै ॥ ४ ॥

(१७३)

गरब न कीजै बावरे, हरि गरब प्रहारी ।
गरबहिंतें रावन गया, पाया दुख भारी ॥ १ ॥
जरन खुदी रघुनाथके, मन नाहिं सुहाती ।
जाके जिय अभिमान है, ताकी तोरत छाती ॥ २ ॥

एक दया और दीनता, ले रहिये भाई ।
चरन गहौ जाय साधके, रीझैं रघुराई ॥ ३ ॥
यही बड़ा उपदेस है, परद्रोह न करिये ।
कह मलूक हरि सुमिरिके, भौसागर तरिये ॥ ४ ॥

(१७४)

ना वह रीझै जप-तप कीन्हे, ना आतमको जारे ।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना कायाके पखारे ॥
दाया करै धरम मन राखै, घरमें रहै उदासी ।
अपना-सा दुख सबका जानै, ताहि मिलै अबिनासी॥
सहै कुसब्द बादहूँ त्यागै, छाँड़ै गरब गुमाना ।
यही रीझ मेरे निरंकारकी, कहत मलूक दिवाना ॥

(१७५)

राम कहो राम कहो, राम कहो बावरे ।
अवसर न चूक भोंदू, पायो भलो दाँव रे ॥ १ ॥
जिन तोकों तन दीन्हों, ताकौ न भजन कीन्हो ।
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे ॥ २ ॥

रामजीको गाय गाय, रामजीको रिझाव रे ।
रामजीके चरन-कमल, चित्तमाहिं लाव रे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे तैं झूठी आस ।
आनँद मगन होइके, हरिगुन गाव रे ॥ ४ ॥

(१७६)

दीनबन्धु दीनानाथ मेरी तन हेरिये ॥ टेक ॥
भाई नाहिं, बन्धु नाहिं, कुटुम-परिवार नाहिं,
ऐसा कोई मित्र नाहिं, जाके ढिँग जाइये ॥ १ ॥
सोनेकी सलैया नाहिं, रूपेका रुपैया नाहिं,
कौड़ी-पैसा गाँठ नाहिं, जासे कछु लीजिये ॥ २ ॥
खेती नाहिं, बारी नाहिं, बनिज-ब्यौपार नाहिं,
ऐसा कोई साहु नाहिं, जासों कछु माँगिये ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ि दे पराई आस,
रामधनी पाइकै अब काकी सरन जाइये ॥ ४ ॥

चरनदास

(१७७) सोहना

सुन सुरत रँगीली हो कि हरि-सा यार करौ ॥टेक॥
जब छूटै बिघन बिकार कि भौ-जल तुरत तरौ ॥१॥
तुम त्रैगुन छैल बिसारि गगनमें ध्यान धरौ ॥२॥
रस अमरित पीवो हो कि बिषया सकल हरौ ॥३॥
करि सील-संतोष सिँगार छिमाकी माँग भरौ ॥४॥
अब पाँचों तजि लगवार अमर घर पुरुष बरौ ॥५॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पियाके पाँव परौ ॥६॥

(१७८)

टुक रंगमहलमें आव कि निरगुन सेज बिछी ।
जहँ पवन-गवन नहिं होय जहाँ जा सुरति बसी ॥१॥
जहँ त्रैगुन बिन निरबान जहाँ नहिं सूर-ससी ।
जहँ हिल-मिलकै सुख मान मुकतिकी होय हँसी॥२॥
जहँ पिय-प्यारी मिलि एक कि आसा दुई नसी ।
जहँ चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी॥३॥

(१७९)

टुक निरगुन छैला सूँ, कि नेह लगाव री ।
जाकौ अजर अमर है देस, महल बेगमपुर री ॥१॥
जहँ सदा सुहागिन होय, पियासूँ मिलि रहु री ।
जहँ आवागवन न होय, मुकति चेरी तेरी ॥२॥
कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्वाँ रहु बौरी ।
तब सुखसागरके बीच, कलहरी ह्वै रहु री ॥३॥

(१८०) **हिंडोला हेलो**

तरसैं मेरे नैन हेली, राम-मिलन कब होयगो ॥टेक॥
पियदरसन बिन क्यों जिऊँ री हेली, कैसे पाऊँ चैन ।
तीर्थ बर्त बहुतै किये री, चित दै सुने पुरान ॥१॥
बाट निहारत ही रहूँ री हेली, सुधि नहिं लीनी आय ।
यह जोबन योंही चलौ री, चालौ जनम सिराय ॥२॥
बिरहा दल साजे रहै री हेली, छिन छिनमें दुख देहि ।
मन लालनके बस परौ, भई भाक-सी देहि ॥३॥

गुरु सुकदेव कृपा करौ जी हेली, दीजै बिरह छुटाय ।
चरनदास पियसूँ मिलै सरन तुम्हारी धाय ॥४॥

(१८१)

मो बिरहिनकी बात हेली, बिरहिन होइ जानिहै ।
नैन बिछोहा जानती री हेली, बिरहै कीन्हों घात ॥
॥ टेक ॥

या तनकूँ बिरहा लगो री हेली, ज्यों घुन लागो काठ ।
निसदिन खाये जातु है, देखूँ हरिकी बाट ॥ १ ॥
हिरदेमें पावक जरै री हेली, तपि नैना भये लाल ।
आसूँपर आसूँ गिरैं, यही हमारो हाल ॥ २ ॥
प्रीतम बिन कल ना परै री हेली, कलकल सब अकुलाहिं ।
डिगी परूँ, सत ना रहौ, कब पिय पकरैं बाँहिं ॥३॥
गुरु सुकदेव दया करैं री हेली, मोहि मिलावै लाल ।
चरनदास दुख सब भजैं, सदा रहूँ पति नाल ॥४॥

(१८२) होली

प्रेमनगरके माहिं होरी होय रही ।
जब सों खेली हमहूँ चित दै,
आपनहूँको खोय रही ॥ १ ॥
बहुतन कुल अरु लाज गँवाई,
रहौ न कोई काम ।
नाचि उठैं, कभी गावन लागैं,
भूले तन-धन-धाम ॥ २ ॥
बहुतनकी मति रंग रँगी है,
जिनकौ लागौ प्रेम ।
बहुतनकों अपनी सुधि नाहीं,
कौन करै अस नेम ॥ ३ ॥
बहुतनकी गद्गद ही बानी,
नैनन नीर ढराय ।
बहुतनको बौरापन लागो,
हौंकी कही न जाय ॥ ४ ॥

प्रेमीकी गति प्रेमी जानै,
जाके लागी होय ।
चरनदास उस नेहनगरकी,
सुकदेवा कहि सोय ॥ ५ ॥

(१८३) मंगल

समझ रस कोइक पावै हो ।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥१॥
बहुत मनुष ढूँढ़त फिरैं, अंधरे गुरु सेवैं हो ।
उनहूँकों सूझै नहीं, औरनकों देवैं हो ॥२॥
अँधरेकों अँधरा मिलै, नारीकों नारी हो ।
ह्वाँ फल कैसे होयगा, समझैं न अनारी हो ॥३॥
गुरु सिष दोउ एक से, एकै व्यवहारा हो ।
गये भरोसे डूबिकै वै, नरक मँझारा हो ॥४॥
सुकदेव कहैं चरनदाससूँ, इनका मत कूरा हो ।
ग्यान मुकति जब पाइये, मिलै सतगुरु पूरा हो ॥५॥

(१८४) सोरठ

वह पुरुषोत्तम मेरा यार ।

नेह लगी टूटै नहिं तार ॥ १ ॥

तीरथ जाउँ न बर्त करूँ ।

चरनकमलको ध्यान धरूँ ॥ २ ॥

प्रानपियारे मेरेहिं पास ।

बन बन माहिं न फिरूँ उदास ॥ ३ ॥

पढ़ूँ न गीता-बेद-पुरान ।

एकहिं सुमिरूँ श्रीभगवान ॥ ४ ॥

औरनकों नहिं नाऊँ सीस ।

हरि ही हरि हैं बिस्वे बीस ॥ ५ ॥

काहूकी नहिं राखूँ आस ।

तृस्ना काटि दई है फाँस ॥ ६ ॥

उद्यम करूँ, न राखूँ दाम ।

सहजहिं ह्वै रहैं पूरन काम ॥ ७ ॥

सिद्धि मुकति फल चाहौं नाहिं ।
नित ही रहूँ हरि संतन माहिं ॥ ८ ॥
गुरु सुकदेव यही मोहिं दीन ।
चरनदास आनँद लवलीन ॥ ९ ॥

(१८५) हिँडोला

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥ टेक ॥
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास ।
लाजके जहँ उड़त बगुले मोर हैं जग हाँस ॥१॥
हरप-सोक दोउ खंभ रोपे सुरत डोरी लाय ।
बिरहपटरी बैठि सजनी उमँग आवै जाय ॥२॥
सकल बिकल तहँ देत झोके बिपत गावनहार ।
सखी बहुतक रंग राती रँगी पाँचौं नार ॥३॥
नैन बादल उमँगि बरसैं दामिनी दमकात ।
बुद्धिको ठहराव नाहीं, नेहकी नहिं जात ॥४॥
सुकदेव कहैं, कोइ बली झूलें, सीस देत अकोर ।
चरनदासा भये बौरे जाति-बरन-कुल छोर ॥५॥

(१८६) विहाग

साधो निंदक मित्र हमारा ।
निंदकको निकटे ही राखों, होन न देउँ नियारा ॥१॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै, सुनि मन मिटै विकारा ।
जैसे सोना तापि अगिनमें, निरमल करै सोनारा ॥२॥
घन अहरन कसि हीरा निबटै, कीमत लच्छ हजारा ।
ऐसे जाँचत दुष्ट संतकूँ करन जगत उजियारा ॥३॥
जोग-जग्य जप पाप कटन हितु, करै सकल संसारा ।
बिन करनी मम करम कठिन सब, मेटै निंदक प्यारा ४
सुखी रहो निंदक जग माँहीं, रोग न हो तन सारा ।
हमरी निंदा करनेवाला, उतरै भवनिधि पारा ॥५॥
निंदकके चरनोंकी अस्तुति, भाखौं बारंबारा ।
चरनदास कहैं सुनियो साधो, निंदक साधक भारा ६

(१८७) परज

जिन्हैं हरिभगति पियारी हो !
मात-पिता सहजै छुटैं, छुटैं सुत अरु नारी हो ॥१॥

लोकभोग फीके लगैं, सम अस्तुति गारी हो ।
हानि-लाभ नहिं चाहिये, सब आसा हारी हो ॥२॥
जगसूँ मुख मोरे रहैं, करैं ध्यान मुरारी हो ।
जित मनुवाँ लागो रहै, भइ घट उँजियारी हो ॥३॥
गुरु सुकदेव बताइया, प्रेमी गति भारी हो ।
चरनदास चारौं बेदसूँ, औरै कछु न्यारी हो ॥४॥

(१८८)

गुरु हमरे प्रेम पियायौ हो ।
ता दिन तें पलटौ भयौ, कुल गोत नसायौ हो ॥१॥
अलम चढ़ौ गगनै लगौ, अनहद मन छायौ हो ।
तेजपुंजकी सेजपै, प्रीतम गल लायौ हो ॥२॥
गये दिवाने देसड़े, आनँद दरसायौ हो ।
सब किरिया सहजै छुटी, तप नेम भुलायौ हो ॥३॥
त्रैगुनतें ऊपर रहूँ, सुकदेव बसायौ हो ।
चरनदास दिन रैन, नहिं तुरिया-पद पायौ हो ॥४॥

(१८९) सोरठ

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ टेक ॥

लखो अचानक अज अबिनासी,

उघरि गये दृग तारा ॥ १ ॥

झूमि रह्यौ मेरे आँगनमें,

टरत नहीं कहुँ टारा ॥ २ ॥

रोम रोम हिय माहीं देखो,

होत नहीं छिन न्यारा ॥ ३ ॥

भयो अचरज चरनदास न पैये,

खोज किये बहु बारा ॥ ४ ॥

(१९०) काफी

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान ।

कहर गरूरी छाँड़ि दिवाने,

तजौ अकसकी बान ॥ १ ॥

चुगली-चोरी अरु निंदा लै,
झूठ कपट अरु कान।
इनकूँ डारि गहै जत सत कूँ,
सोई अधिक सयान ॥ २ ॥
हरि हरि सुमिरौ, छिन नहिं बिसरौ,
गुरुसेवा मन ठानि।
साधुनकी संगति कर निस-दिन,
आवै ना कछु हानि ॥ ३ ॥
मुड़ौ कुमारग, चलौ सुमारग,
पावौ निज पुर बास।
गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूँ,
समुझ चरन हीं दास ॥ ४ ॥

गुरु नानक

(१९१)

राम सुमिर, राम सुमिर, एही तेरो काज है ॥टेक॥
मायाकौ संग त्याग, हरिजूकी सरन लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठौ सब साज है ॥ १ ॥
सुपने ज्यों धन पिछान, काहेपर करत मान ।
बारूकी भीत तैसें, बसुधाकौ राज है ॥ २ ॥
नानक जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात ।
छिन छिन करि गयौ काल्ह,तैसे जात आज है ॥ ३ ॥

(१९२)

सब कछु जीवतकौ ब्यौहार ।
मात-पिता, भाई-सुत, बांधव,
अरु पुनि गृहकी नारि ॥ १ ॥
तनतें प्रान होत जब न्यारे,
टेरत प्रेत पुकार ।

आध घरी कोऊ नहिं राखै,
घरतें देत निकार ॥ २ ॥
मृग-तृस्ना ज्यों जग रचना यह,
देखौ हृदै बिचार ।
कह नानक, भजु रामनाम नित,
जातें होत उधार ॥ ३ ॥

(१९३)

हौं कुरबाने जाउँ पियारे, हौं कुरबाने जाउँ ॥टेक॥
हौं कुरबाने जाउँ तिन्हाँ दे, लैन जो तेरा नाउँ ।
लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाँ दे, हौं सद कुरबाने जाउँ।१।
काया रँगन जे थिये प्यारे, पाइये नाउँ मजीठ ।
रंगनवाला जे रँगे साहिब, ऐसा रंग न डीठ ॥२॥
जिंनके चोलड़े रत्तड़े प्यारे, कंत तिन्हाँ दे पास ।
धूड़ तिन्हाँ को जे मिले जीको, नानकदी अरदास ।३।

(१९४)

मुरसिद मेरा मरहमी, जिन मरम बताया ।

दिल अंदर दीदार है, खोजा तिन पाया ॥ १ ॥
तसबी एक अजूब है, जामें हरदम दाना ।
कुंज किनारे बैठिके, फेरा तिन्ह जाना ॥ २ ॥
क्या बकरी, क्या गाय है, क्या अपनो जाया ।
सबको लोहू एक है, साहिब फ़रमाया ॥ ३ ॥
पीर पैग़म्बर औलिया, सब मरने आया ।
नाहक जीव न मारिये, पोषनको काया ॥ ४ ॥
हिरिस हिये हैवान है, बसि करिलै भाई ।
दाद इलाही नानका, जिसे देवै खुदाई ॥५॥

(१९५)

काहे रे बन खोजन जाई ।
सरब निवासी सदा अलेपा,
तोही संग समाई ॥ १ ॥
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है,
मुकर माहिं जस छाई ।

तैसे ही हरि बसै निरंतर,
घट ही खोजौ भाई ॥२॥
बाहर भीतर एकै जानों,
यह गुरु ग्यान बताई ।
जन नानक बिन आपा चीन्हे,
मिटै न भ्रमकी काई ॥ ३ ॥

(१९६)

प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे ।
प्रेम-भगति निज नाम दीजिये,
द्याल अनुग्रह धारे ॥ १ ॥
सुमिरौं चरन तिहारे प्रीतम,
हृदै तिहारी आसा ।
संत जनोंपै करौं बेनती,
मन दरसनकौ प्यासा ॥ २ ॥
बिछुरत मरन, जीवन हरि मिलते,
जनको दरसन दीजै ।

नाम अधार, जीवन, धन नानक,
प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥ ३ ॥

(१९७)

अब मैं कौन उपाय करूँ ।
जेहि बिधि मनको संसय छूटै,
भव-निधि पार परूँ ॥ १ ॥
जनम पाय कछु भलौ न कीन्हों,
तातें अधिक डरूँ ॥ २ ॥
गुरुमत सुन कछु ग्यान न उपज्यौ,
पसुवत उदर भरूँ ॥ ३ ॥
कह नानक, प्रभु बिरद पिछानौ,
तब हौं पतित तरूँ ॥ ४ ॥

(१९८)

या जग मीत न देख्यो कोई ।
सकल जगत अपने सुख लाग्यो,
दुखमें संग न होई ॥ १ ॥
दारा-मीत, पूत-संबंधी,

सगरे धनसों लागे ।
जबहीं निरधन देख्यो नरकों,
संग छाड़ि सब भागे ॥ २ ॥
कहा कहूँ या मन बौरेकौं,
इनसों नेह लगाया ।
दीनानाथ सकल भय-भंजन,
जस ताको बिसराया ॥ ३ ॥
स्वान-पूँछ ज्यों भयो न सूधो,
बहुत जतन मैं कीन्हौ ।
नानक लाज बिरदकी राखौ
नाम तिहारो लीन्हौ ॥ ४ ॥

(१२२)

जो नर दुखमें दुख नहिं मानै ।
सुख-सनेह अरु भय नहिं जाके,
कंचन माटी जानै ॥ १ ॥
नहिं निंदा, नहिं अस्तुति जाके,

लोभ-मोह-अभिमाना ।
हरष सोकतें रहै नियारो,
नाहिं मान-अपमाना ॥ २ ॥
आसा-मनसा सकल त्यागिकै,
जगतें रहै निरासा ।
काम-क्रोध जेहि परसै नाहिन,
तेहिं घट ब्रह्म निवासा ॥ ३ ॥
गुरु किरपा जेहिं नरपै कीन्ही,
तिन यह जुगति पिछानी ।
नानक लीन भयो गोविंदसों,
ज्यों पानी सँग पानी ॥ ४ ॥

(२००)

यह मन नेक न कह्यौ करै ।
सीख सिखाय रह्यो अपना-सी,
दुरमतितें न टरै ॥ १ ॥
मद-माया-बस भयौ बावरौ,

हरिजस नहिं उचरै।
करि परपंच जगतके डहकै,
अपनौ उदर भरै॥ २॥
स्वान-पूँछ ज्यों होय न सूधौ,
कह्यौ न कान धरै।
कह नानक, भजु रामनाम नित,
जातें काज सरै॥ ३॥

(२०१)

जगतमें झूठी देखी प्रीत।
अपने ही सुखसों सब लागे, क्या दारा, क्या मीत॥
मेरौ मेरौ सभी कहत हैं, हितसों बाँध्यौ चीत।
अंतकाल संगी नहिं कोऊ, यह अचरजकी रीत॥
मन मूरख अजहूँ नहिं समुझत, सिख दै हारयौ नीत।
नानक भव-जल-पार परै जो गावै प्रभुके गीत॥

दरिया साहब

(२०२)

जाके उर उपजी नहिं भाई।
सो क्या जानै पीर पराई ॥टेक॥
ब्यावर जानै पीरकी सार।
बाँझ नार क्या लखै बिकार ॥ १ ॥
पतिब्रता पतिकौ ब्रत जानै।
बिभचारिन मिल कहा बखानै ॥ २ ॥
हीरा-पारख जौहरी पावै।
मूरख निरखकै कहा बतावै ॥ ३ ॥
लागा घाव कराहै सोई।
कोगतहार के दरद न कोई ॥ ४ ॥
रामनाम मेरा प्रान-अधार।
सोई रामरस पावनहार ॥ ५ ॥
जन दरिया जानैगा सोई।
(जाके) प्रेमकी भाल कलेजे पोई ॥ ६ ॥

(२०३)

जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा ।

अधम कमीन जाति मतिहीना,

तुम तौ हौ सिरताज हमारा ॥टेक॥

कायाका जंत्र सब्द मन मुठिया,

सुषमन ताँत चढ़ाई ।

गगनमँडलमें धुनुआँ बैठा,

मेरे सतगुर कला सिखाई ॥ १ ॥

पाप पान हर कुबुध काँकड़ा,

सहज सहज झड़ जाई ।

घुंडी-गाँठ रहन नहिं पावै,

इकरंगी होय आई ॥ २ ॥

इकरँग हुआ भरा हरि चोला,

हरि कहै कहा दिलाऊँ ।

मैं नाहीं मेहनतका लोभी,

बकसौ मौज भगति निज पाऊँ ॥ ३ ॥

किरपा कर हरि बोले बानी,
तुम तौ हौ मम दास।
दरिया कहै, मेरे आतम भीतर,
मेलौ राम भगति बिस्वास ॥ ४ ॥

(२०४)

बाबल कैसे बिसरो जाई।
जदि मैं पति सँग रल खेलूँगी,आपा धरम समाई।टेक।
सतगुरु मेरे किरपा कीनी, उत्तम बर परणाई।
अब मेरे साईंको सरम पड़ैगी, लेगा हृदै लगाई॥
थे जानराय, मैं बाली-भोली, थे निरमल, मैं मैली।
थे बतलाओ, मैं बोल न जानूँ, भेद न सकूँ सहेली॥
थे ब्रह्मभाव, मैं आतम कन्या, समझ न जानूँ बानी।
दरिया कहै, पति पूरा पाया, यह निश्चै कर जानी॥

(२०५) भैरव

कहा कहूँ मेरे पिउकी बात।
जो रे कहूँ सोइ अंग सुहात ॥टेक॥

जब मैं रही थी कन्या क्वाँरी ।
तब मेरे करम हता सिर भारी ॥ १ ॥
जब मेरी पिउसे मनसा दौड़ी ।
सतगुरु आन सगाई जोड़ी ॥ २ ॥
जब मैं पिउका मंगल गाया ।
तब मेरा स्वामी ब्याहन आया ॥ ३ ॥
हथलेवा कर बैठी संगा ।
तब मोहिं लीनी बाँये अंगा ॥ ४ ॥
तन दरिया कहै मिट गई दूती ।
आपौ अरप पीवसँग सूती ॥ ५ ॥

(२०६)

रामनाम नहिं हिरदे धरा ।
जैसा पसुवा तैसा नरा ॥ १ ॥
पसुवा-नर उद्यम कर खावै ।
पसुवा तौ जंगल चर आवै ॥ २ ॥

पसुवा आवै, पसुवा जाय।
पसुवा चरै औ पसुवा खाय ॥ ३ ॥
रामनाम ध्याया नहिं माई।
जनम गया पसुवाकी नाईं ॥ ४ ॥
रामनामसे नाहीं प्रीत।
यह ही सब पसुवोंकी रीत ॥ ५ ॥
जीवत सुखदुखमें दिन भरै।
मुवा पछे चौरासी परै ॥ ६ ॥
जन दरिया जिन राम न ध्याया।
पसुवा ही ज्यों जनम गँवाया ॥ ७ ॥

श्रीहरिः

श्रीजयदयालजी गोयन्दकाद्वारा लिखित–

तत्त्व-चिन्तामणि भाग १ (सचित्र)

प्रस्तुत पुस्तकमें 'कल्याण' में प्रकाशित निबन्धोंका संग्रह है। पृष्ठ ३५०, मूल्य ||=) सजिल्द ··· |||-)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग १ (सचित्र)

(छोटे आकारका गुटका संस्करण)

साइज २२×२९, ३२ पेजी, पृष्ठ ४८८, |-), |=)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग २ (सचित्र)

इसमें 'कल्याण' के ४८ निबन्धोंका संग्रह है, पृष्ठ ६३२, मूल्य |||=), सजिल्द १=)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग २ (सचित्र)

(छोटे आकारका गुटका संस्करण)

साइज २२×२९, ३२ पेजी, पृष्ठ ७५०, मू० |=), ||)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग ३ (सचित्र)

प्रथम और द्वितीय भागोंको देखनेसे इसकी उपयोगिता समझ जायँगे। पृष्ठ ४५०, मू० ||=), |||=)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग ३ (सचित्र)

(छोटे आकारका गुटका संस्करण)

साइज २२×२९, ३२ पेजी, पृष्ठ ५६०, मू० |-), |=)

पता–गीताप्रेस, गोरखपुर।